भीखा साहब की बानी

और

जीवन-चरित्र

जिस मैं

उन महात्मा के अति मनोहर भजन, ककहरा,
अलिफ़-नामा, पहाड़ा, कुंडलिया और
साखी शोध कर मुख्य मुख्य अंगों मैं
यथाक्रम रक्खी गई हैं
और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी
नोट मैं लिख दिये गये हैं।

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्कस से प्रकाशित तथा उक्त प्रेस मैं
मिस्टर ई० हाल द्वारा मुद्रित

सन् १९१९

[दाम ।=)

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओँ की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है जितनी बानियाँ हमने छापी हैँ उन मेँ से बिशेष तो पहिले छपी ही नहीँ थीँ और जो छपी थीँ सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप मेँ या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीँ उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैँ और फुटकल शब्दोँ की हालत मेँ सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैँ, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियोँ का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीँ छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दोँ के अर्थ और संकेत फुट-नोट मेँ दे दिये हैँ, जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तोँ और महापुरुषोँ के नाम किसी बानी मेँ आये हैँ उन के बृत्तांत और कौतुक संछेप से फुट-नोट मेँ लिख दिये गये हैँ।

दो अंतिम पुस्तकेँ इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीँ जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओँ और बुद्धिमानोँ के बचनोँ की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य मेँ सन् १९१६ मेँ छपी है जिसके विषय मेँ श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओँ का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयोँ की सेवा मेँ प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि मेँ आवेँ उन्हेँ हम को कृपा करके लिख भेजेँ जिस से वह दूसरे छापे मेँ दूर कर दिये जावेँ।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

सितम्बर सन् १९१९ ई० इलाहाबाद।

भीखा साहब का जीवन-चरित्र

भीखा साहब जिनका घरऊ नाम भीखानंद था जाति के ब्राह्मन चौबे थे। ज़िला आज़मगढ़ के खानपुर बोहना नाम के गाँव में उन्हों ने जन्म लिया जिसे दो सौ बरस के क़रीब हुए।

बाल अवस्था ही से उन को परमार्थ और साध संग का इतना उत्साह था कि बारह बरस की उमर में घर बार त्याग कर पूरे गुरू और सच्चे मत की खोज में काशी को गये पर वहाँ कुछ न पाकर लौटे रास्ते में पता लगा कि ग़ाज़ीपुर ज़िले के भुरकुड़ा गाँव में एक शब्द अभ्यासी महात्मा गुलाल साहब दर्शन के योग्य हैं। फिर तो यह वहाँ को दौड़े और उन से उपदेश लिया। इस हाल को भीखा साहब ने अपने एक शब्द में लिखा है —(देखो पहिला शब्द पृष्ठ १४ - १५ में)

भीखा साहब अनुमान बारह बरस तक तन मन धन से अपने गुरू गुलाल साहब की रात दिन सेवा और सतसंग करते रहे। इस के पीछे जब गुलाल साहब गुप्त हुए तब इन को उन की गद्दी मिली और चौबीस पच्चीस बरस तक अपने सतसंग और उपदेश से जीवों को चेताते और परमारथ का धन लुटाते रहे। भुरकुड़ा में जब से बारह बरस की अवस्था में यह आये कहीं बाहर नहीं गये और वहीं अनुमान पचास बरस की उमर में शरीर त्याग किया। भुरकुड़ा में इन की समाधि और इन के गुरू गुलाल साहब और दादा-गुरू बुल्ला साहब की समाधें मौजूद हैं जहाँ बिजय-दसमी पर बड़ा भारी मेला होता है।

भीखा साहब के पंथ में बहुत से लोग हैं और अकेले भुरकुड़ा गाँव और बलिया ज़िले के बड़ागाँव में और उन के आस पास उस मत के कई हज़ार अनुयायी रहते हैं।

हम ने इन दोनों स्थानों और दूसरी जगहों और ग्रंथों से भीखा साहब के जन्मने और गुप्त होने का समय जानना चाहा पर कहीं ठीक ठीक पता न लगा। परंतु एक हस्त-लिखित पुस्तक भुरकुड़ा में मौजूद है जिसे लोग कहते हैं कि गुलाल साहब ने भीखा साहब की मौजूदगी में लिखा और दोनों का छाप बहुतेरे पदों में मिलने से इस कथन का प्रमान होता है। इस ग्रंथ में लिखा है कि उसका बनाना बिक्रमी सम्वत १७८८ में आरंभ हुआ और फागुन सुदी ५ बृहस्पतिवार सम्बत १७९२ को समाप्त हुआ। इस हिसाब से भीखा साहब के जन्म का साल अनुमान सम्बत १७७० और गुप्त होने का १८२० ठहरता है।

॥ सूची पत्र ॥

अ

इ

उ

ए

क

शब्द पृष्ठ

य

र

भीखा साहब की शब्दावली

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

मन तू राम से लै लाव।
त्याग के परपंच माया सकल जगहिँ नचाव ॥ १ ॥
साँच की तू चाल गहि ले झूँठ कपट बहाव।
रहनि सौं लौ लीन ह्वै गुरु-ज्ञान ध्यान जगाव ॥ २ ॥
जोग की यह सहज जुक्ति बिचारि कै ठहराव।
प्रेम प्रीति सौं लागि के घट सहजहीं सुख पाव ॥ ३ ॥
दृष्टि तेँ आदृष्टि देखो सुरति निरति बसाव।
आतमा निर्धार निर्भौ बानि अनुभव गाव ॥ ४ ॥
अचल अस्थिर[1] ब्रह्म सेवो भाव चित अरुझाव।
भीखा फिर नहिँ कबहुँ पैहौ बहुरि ऐसो दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

भजि लेहु आतम रामै,
मन तुम भजि लेहु आतम रामै ॥ टेक ॥
यह माया बिस्तार खड़ा है, जग परपंच हरामै ॥ १ ॥
सुत कलित्र[2] धन बिषै सुक्ख दुख, अंत माया केहि कामै॥२॥
दिन दिन घरि पल समय जातु है, तन काँचो सुठि[3] खामै[4]॥३॥
हाड़ मास नस रुधिर को बेठन, रूप रँगीलो चामै ॥४॥

---

(१) स्थिर। (२) स्त्री। (३) सुन्दर। (४) बेकाम।

ता को बेद बेदांत प्रसंसत, घट घट केवल नामै ॥५॥
सतगुरु कृपा गयो कोउ तहवाँ, जहवाँ छाँह न घामै ॥६॥
जहँ जैसो तहँ तैसो साहब, लाल गोर कहुँ स्यामै ॥७॥
अवलोकहु[1] हरि रूप बैठि के, सुन्न निरंतर धामै ॥८॥
व्यापक ब्रह्म चहूँ जुग पूरन, है सब मैं सब तामैं[2] ॥९॥
आगे पाछे अर्ध उर्ध जोइ, सोइ दहिने सोइ बामै ॥१०॥
भीखा भजन को दाँव बनो है, ईहै दम इह दामै ॥११॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तुम राम नाम चित धारो ।
जो निज कर अपनो भल चाहो, ममता मोह बिसारो ॥१॥
अंदर मैं परपंच बसायो, बाहर भेख सँवारो ।
बहु बिपरीति कपट चतुराई, बिन हरि भजन बिकारो ॥२॥
जप तप मख[3] करि बिधि बिधान, जत तत उदबेग निवारो ।
बिन गुरु लच्छ सुदृष्टि न आवे, जन्म मरन दुख भारो ॥३॥
ज्ञान ध्यान उर करहु धरहु दृढ़, सब्द सरूप बिचारो ।
कह भीखा लीलीन रहो उत, इत मत[4] सुरति उतारो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

जग के करम बहुत कठिनाई ।
तातेँ भरमि भरमि जहँड़ाई[5] ॥ टेक ॥
ज्ञानवंत अज्ञान होत है, बूढ़ करत लरिकाई ।
परमारथ तजि स्वारथ सेवहिं, यह धौं कौन बड़ाई ॥१॥
बेद बेदान्त को अर्थ बिचारहिं, बहु बिधि रुचि उपजाई ।
माया मोह ग्रसित निस बासर, कौन बड़ो सुखदाई ॥२॥

---

(१) देखो । (२) तिस मैं । (३) यज्ञ । (४) नहीं । (५) ठगाते हैं ।

लेहि बिसाहि[1] काँच को सौदा, सोना नाम गँवाई ।
अमृत तजि विष अँचवन लागे, यह धौं कौनि मिठाई ॥३॥
गुरु परताप साध की संगति, करहु न काहे भाई ।
अंत समय जब काल गरसि है, कौन करौ चतुराई ॥४॥
मानुष जनम बहुरि नहिं पैहौ, बादि[2] चला दिन जाई ।
भीखा को मन कपट कुचाली, धरन[3] धरै मुरखाई ॥५॥

॥ शब्द ५ ॥

देखो निज सरूप हरि केरा, तातेँ कार कौतुकी तेरा॥टेक॥
प्रभु मेँ संत संत मेँ प्रभु हैँ, या मेँ फार न फेरा ।
केवल आतम राम बिराजत, निकटहिँ जिय हिय हेरा ॥१॥
मानुष जन्म याहि करि पायो, भजि ले नाम सबेरा ।
बाल कुमार जुवा बिरधापन, होइ होइ जात अबेरा ॥२॥
चेतन प्रान अपान सो जड़, उदान ब्यान महँ डेरा ।
कहत है और करत है औरै, बलकत[4] फिरत अनेरा[5]॥३॥
यह मन कठिन कठोर अपर्बल, कियो सकल जग जेरा[6] ।
माया मोह मेँ फँसि गयो, भयो सुत कलित्र[7] धन चेरा ॥४॥
आयू[8] घटत बढ़त तन देखत, लाभ लोभ तन घेरा ।
आवत जात चरख[9] चौरासी, करम न करत निबेरा ॥५॥
सिर पर काल बसत निसु बासर, मारत तुरत चबेरा[10] ।
काहे न बाँधहु भव उतरन कहँ, सत्त सब्द को बेरा[11] ॥६॥
कहत हैँ बेद बेदांत संत पुनि, गुरू कान महँ टेरा ।
भीखा भाग बिना नहिँ देखत, निकटहिँ दीप[12] अँधेरा॥७॥

---

(१) मोल । (२) मुफ़्त । (३) टेक । (४) उबलता । (५) बेफ़ायदा । (६) ज़ेर, परास्त । (७) स्त्री । (८) उमर । (६) चक्र । (१०) थप्पड़ । (११) बेड़ा । (१२) चिराग़ ।

॥ शब्द ६ ॥

मन मानि ले रे तू कहल हमार ।

फिरि फिरि मानुष जनम न पैहाे, चौरासी अवतार॥टेक॥
पागा माया बिषै मिठाई, काम क्रोध रत सोई ।
सुर नर मुनि गन गंधर्ब कछु कछु, चाखत है सब कोई॥१॥
त्रिबिधि ताप को फंद परो है, सूझत वार न पारा ।
काल कराल बसै निकटहिँ, धरि मारि नर्क महँ डारा ॥२॥
संत साध मिलि हाट लगायो, सौदा नाम भराई ।
जो जा को अधिकार होत तिन, तैसो बस्तु मोलाई॥३॥
सब सत्ती धन धाम सकल लै, सरनागति में डारा ।
समझो बूझि बिचारि उतारो, अपने सिर को भारा॥४॥
जोग जुक्ति कै परचो पैहाे, सुरति निरति ठहराई ।
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, अनहद धुनि घहराई ॥५॥
सुरति मगन परमारथ जागै, करम होहि जरि छारा[1] ।
ज्ञान ध्यान कै खानि खुलै जब, तब छूटै संसारा ॥६॥
भक्ति भाव कल्पद्रुम छाया, ताप रहै नहिँ देई ।
चारि पदारथ अज्ञाकारी, पर[2] सोँ कबहिँ न लेई ॥७॥
राम नाम फल मिलो जाहि को, प्रेम सुधा रस धारा ।
पुलकि पुलकि मन पान करो तुम, निस दिन बारम्बारा॥८॥
गुरु परताप कहाँ लगि बरनोँ, उक्ती एक न आई ।
रसना जो कहिँ होयँ सहसदस, उपमा गाय न जाई ॥९॥
आतम राम अखंडित आपै, निज साहब बिस्तारा ।
भीखा सहज समाधी लावो, अवसर इहै तुम्हारा ॥१०॥

---

(१) राख । (२) पराया या दूसरा ।

॥ शब्द ७ ॥

समय जून आवन सोइ आई, मन कहहू तैं नहिं पतियाई १
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, देहि अवध नियराई ॥२॥
मूरख तदपि नाहिं चित चिंता, माने करतल[1] भै अमराई[2] ३
सुर नर मुनि गन गंधर्ब दानव, काल करम दुख पाई॥४॥
ब्रह्मा बिस्नु सीव सनकादि दे[3], प्रभु डर को न डेराई॥५॥
अमर चिरंजिव लोमस समता[4], तिन पर त्रास जनाई॥६॥
भीखा निर्भय राम सरन इक, का किये बहुत सिधाई[5]॥७॥

॥ शब्द ८ ॥

जग में लोभ मोह नर भूलो ।
तातैं नेकु दृष्टि नहिं खूलो ॥टेक॥
नीचे ऊँचे महल उठावहिं, जित पसार धन दर्बा ।
सो तैसो गुजरान दिना दस, अंत काल बसि सर्बा[6] ॥१॥
ब्रह्म बोलता छाँड़ि करतु है, लोक बेद कै आस ।
ज्यौं मृग सँग कस्तूरी महकै, सुँघत फिरै बहु घास ॥२॥
काम क्रोध अरु मोर तोर मैं, मनुआँ भटका खात ।
ज्यौं केहरि बपु छाँहि कूप लखि, करत आपनी घात[7] ॥३॥
केवल ब्रह्म सकल घट ब्यापक, घाटि कहूँ नहिं पूरा ।
आतम राम भर्म के बसि परि, यह आचरज जहूरा ॥४॥
जोग जग्य तप दान नेम करि, चाहत राम को भैंटा ।
जल पतथल करि हरि आराधहिं, बाँझ खेलावहिं बेटा ॥५॥

---

(१) मुट्ठी । (२) समझता है कि न मरना अपने हाथ में है । (३) आदिक । (४) लोमस ऋषि सरीखे जो अमर थे । (५) सिधाई । (६) आख़िर में सब काल के बस में पड़ैंगे । (७) जैसे शेर अपने रूप की परछाईं कुए में देख कर कूद पड़ा और जान गँवाई ।

देवता पितर भूत गन पूजहिँ, धरे सो तन बिकरारी ।
जोति सरूप न आपा चीन्हत, महा सो अधम अनारी॥६॥
भीखा स्वारथ खेत बोवायो, बीज पुन्न अरु पाप ।
जो अघाय सो भोग करत है, करता करम को बाप ॥७॥

॥ शब्द ९ ॥

या जग मँ रहना दिन चारी। तातँ हरि बरनन चित वारी॥१
सिरपर काल सदा सर[1] साधे। अवसर परे तुरतहीं मारी॥२
भीखा केवल नाम भजे बिनु। प्रापति कष्ट नरक भारी ॥३

॥ शब्द १० ॥

मन तुम राम न भजहु सबेरा ।
पहर दुपहर तीसरे पहरे, होइ होइ जात अबेरा ॥ १ ॥
जागहु खड़े होहु जीवत माँ, सो केवल हित तेरा ।
भ्रम घूँघट पट खोलि बिचारो, सहजहिँ मेटि अँधेरा॥२॥
सतगुरु नैन सैन कै परिचै, होत न लागत देरा ।
अचरज महा अलौकिक रचना, देखत निकटहिँ नेरा ॥३॥
सहज समाधि कै चाह करहु तब, आपा परे निबेरा ।
खोज खोज कोउ अंत न पायो, सुर नर मुनि बहुतेरा॥४॥
तुरिया सब्द उठत अभि[2] अंतर, सोहं सोहं टेरा ।
पूरब लिखो अछर अनमूरति, आपुहिं चित्र चितेरा ॥५॥
सर्व जहाँ लगि रूप तुम्हारो, जल थल बन गिरि हेरा ।
कह भीखा इक धन्य तुही है, पटतर[3] दाँ केहि केरा ॥६॥

॥ शब्द ११ ॥

जो कोउ राम नाम चित धरै ।
तन मन धन न्योछावर वारै, सहज सुफल फल फरै॥१॥

(१) बान । (२) घट । (३) उपमा ।

गुरु परताप साध की संगति, जोग जुक्ति उर भरै ।
इँगला पिंगला सुखमन सोधै, ज्ञान अगिन उदगरै[१] ॥२॥
चाँद सुरज एकागर[२] करि कै, उलटि उरध अनुसरै ।
नाद बिंद को जोहु[३] गगन मैं, मन माया तब मरै ॥३॥
आठ पहर नौबत धुनि बाजै, नेक पलक नहिं टरै ।
भीखा सब्द सुनतहिं अबुध बुध, अमरख[४] हरख करै ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

मन तोहिं कहत कहत सठ हारे ।
ऊपर और अंतर कछु औरै, नहिं बिस्वास तिहारे ॥१॥
आदिहिं एक अंत पुनि एकै, मद्धहुँ एक बिचारे ।
लबज लबज एहवर ओहवर करि[५], करम दुइत करि डारे ॥२॥
बिषया रत परपंच अपरबल, पाप पुन्न परचारे ।
काम क्रोध मद लोभ मोह कब, चोर चहत उँजियारे ॥३॥
कपटी कुटिल कुमति बिभिचारी, हो वा को अधिकारे ।
महा निलज कछु लाज न तो को, दिन दिन प्रति
मोहिं जारे ॥ ४ ॥
पाँच पचीस तीन मिलि चाह्यो, बनलिउ[६] बात बिगारे ।
सदा करेहु बैपार कपट को, भरम बजार पसारे ॥ ५ ॥
हम मन ब्रह्म जीव तुम आतम, चेतन मिलि तन खारे ।
सकल दोस हमको काहे दइ, होन चहत हो न्यारे ॥६॥
खोलि कहौं[७] तरंग नहिं फेस्यो, यह आपुहि महिमा रे ।
बिन फेरे कछु भयो न ह्वैहै, हम का करहिं बिचारे ॥७॥
हमरी रुचि जग खेल खेलौना, बालक साज सँवारे ।
पिता अनादि अनख[८] नहिं मानहि, राखत रहहि दुलारे॥८

(१) जगावै । (२) इकट्ठा । (३) ढूँढ़ । (४) गुस्सा, रंज । (५) लफ़्ज़ों को इधर उधर करके । (६) बनी हुई । (७) कभी । (८) नाराज़ी ।

जप तप भजन सकल हैँ बिरथा, ब्यापक जबहिँ बिसारे।
भीखा लखहु आपु आतम कहँ, गुनना तजहु खमा[१] रे॥९॥

॥ शब्द १३ ॥

हे मन राम नाम चित धौबे[२]।
काहे इत उत धाइ मरतु है। अवसिक भजन राम कै कौबे[३]॥ १ ॥
गुरुपरताप साध की संगति, नाम पदारथ रुचि से खौबे।
हरदम सोहं सब्द उठतु है, बिमल बिमल धुनि गौबे॥२
सुरति निरति अंतर लौ लावै, अनहद नाद गगन घर जौबे।
रमता राम सकल घट ब्यापक, नाम अनंत एक ठहरौबे॥३
तहाँ गये जग सौँ जर[४] टूटे, तीनि ताग गुन औगुन नौ[५]बे।
जनम अस्थान खानपुर बुहना[६], सेवत चरन भिखानंद चौबे॥४

॥ शब्द १४ ॥

सजनी कौल कै सोच मोहिँ, लगो रहत दिन रजनी॥टेक॥
इन पाँचो परपंच चलायो, पाप पुन्न की लदनी।
आयो नफा लेन दियो टूटो[७], मरत बहुत तेहि लजनी[८]।
हरिजन हरिचरचा नित बाँटहिँ, ज्ञान ध्यान की ददनी[९]१
मनुवाँ इमिल धुमिल[१०] मैँ अरुझेव, छूटलि नाम महजनी[११]॥२
जगन्नाथ जग बिदित सकल घट, ब्रह्म सरूप बिरजनी[१२]।
खासा आपै आपु न परखत, बिषै बिसाहत[१३] ममनी[१४]॥३॥

---

(१) भीतर घुसी या छिपी हुई। (२) धर। (३) कर। (४) जड़। (५) तीन गुनोँ का तागा अर्थात सत, रज, तम, और नौ औगुन अर्थात पाँच भूत काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, और चार बिषय अर्थात आसा, मनसा, ईर्षा, बिरोध। (६) आज़मगढ़ के ज़िले मेँ एक गाँव का नाम जहाँ भीखा साहब पैदा हुए थे। (७) घाटा। (८) लाज। (९) पेशगी दाम। (१०) मलीन ब्यौहार। (११) महाजनी। (१२) बिराजमान। (१३) मोल लेता है। (१४) ममता।

अंदर की प्रभु सब जानत धौं, काह मौज मेरो बमनो[1] ।
कोर[2] तनिक जेहिँ ओर कृपा कियो,
भीखा भाग तेहिँ जगनो ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

मन तुम लागहु सुद्ध सरूपे ॥ टेक ॥
तन मन धन न्यौछावरि वारो बेगि तजो भव कूपे ॥१॥
सतगुरु कृपा तहाँ लै लावो जहाँ छाँह नहिँ धूपे ॥२॥
पइया[3] करम ध्यान सौँ फटको जोग जुक्ति करि सूपे ॥३॥
निर्मल भयो ज्ञान उँजियारो गुंग भयो लखि चूपे ॥४॥
भीखा दिव्य दृष्टि सौँ देखत सोहं बोलत मू पे ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

मन तुम छोड़हु सकल उदासी ।
राम को नाम तीर्थ घट ही मैं, दिल द्वारिका औ
काया कासी ॥ १ ॥
करते जग अपने कर बाँधो, तिरगुन डोरि को फाँसी ।
भिन्न भिन्न निज गुन बरतावहिँ, काहू कै कछु न
सिरासो[4] ॥ २ ॥
तेहि तेँ कनक कामनी अरुझो, हरि सौँ सदा निरासी ।
अंते नैन स्रवन अंते है, रसना अंते साँसी ॥ ३ ॥
ब्रह्म सरूप अनूप भूप बर, सोभा सुख को रासी ।
केवल आतम राम बिराजत, परमातम अबिनासी ॥४॥
अपरंपार अखंडित बानी, अकथ कथो नहिँ जासी ।
सो परभाव प्रगट सतसंगति, जोग जुगत अभ्यासी ॥५॥

(१) टेढ़ी । (२) तिरछी चितवन । (३) खोखला धान, और पई एक कीड़े का भी नाम है जो अन्न में पड़ जाता है । (४) बस चलना ।

सतगुरु ज्ञान बान जेहिँ मार्‌यो, लगी मरम उर गाँसी ।
घायल घुरमित[१] उलटि गयो त्यों, चेतन उदित प्रकासी ॥६॥
जग समुद्र नवका[२] नर देही, कनिहर[३] गुरु बिस्वासी ।
अमृत हरि को नाम सजीवन, चाखत छकि न अघासी ॥७
बेद बेदांत संत मुख भाखहिँ, धन्य जो नाम उपासी ।
मन क्रम बचन जु हरि रँग राते, तजे जगत उपहाँसी ॥८॥
जो एकै व्यापक आतम तैा, को ठाकुर को दासी ।
ब्रह्म सरूप है साहब सेवक, दिब्य दृष्टि है खासी ॥ ९ ॥
अलख राम को लखै सोई जन, जो भ्रम भीति को ढासी[४] ।
सोइ जोगी जोगेसुर ध्यानी, जा की रहनि अकासी ॥१०॥
हरि सौँ प्रीति निरंतर दिन दिन, छूटी भूख पियासी ।
सुरति मिली अवलोकि निरति महँ, कहँ आवै कहँ जासी ॥११
त्यागि सकल परपंच बिषै हरि, ताहि मिलै अन्यासी[५] ।
निरमोही निर्बान निरंजन, निरममता सन्यासी ॥१२॥
मोहनभोग सेख[६] लै बैठो, सुन्न मैँ आसन डासी ।
भीखा पावत[७] मगन रैन दिन, टाटक[८] होत न बासी ॥१३॥

॥ शब्द १७ ॥

निज घर काहे न छावत मन तुम ।
सिर पर काल कराल घटा लै,
तन को त्रास दिखावत ॥टेक॥
अनहद नाद गगन घहरानो, आयुस[९] समय जनावत ।
हेइ होउ[१०] आजु कालि दिन बीतत,
भ्रम बसि चेत न आवत ॥१॥

---

(१) घूमता हुआ। (२) नाव। (३) खेवट। (४) गिरा देवै। (५) आप से आप। (६) गुरु, मुर्शिद। (७) खाता है। (८) ताज़ा। (९) ज़िन्दगी। (१०) इस बस काम मेँ।

जब आयो तब का कहि आयो, जाहु तो का कहि जावत ।
अगुवन[1] चेतु समय बीते पर, पाछे काम नसावत ॥२॥
सतसंगति करु ज्ञान को संग्रह, सुरति निरति सुरझावत ।
आतम राम प्रकास को छाजा, जम जल निकट न आवत॥३॥
जल भरि थल भरि पूरन उमग्यो, भाव रहस्य[2] बढ़ावत।
जहँ देखो तहँ रूपहि भासै, अपुहिँ आपु दरसावत ॥४॥
घर मैँ मौज बाहर फिर मौजै, मौजै मौज बनावत ।
कह भीखा सब मौज साहब की, मौजी आपु कहावत ॥५॥

॥ शब्द १८ ॥

जो कोउ या बिधि हरि हिय लावै ।
खेती बनिज चाकरी मन तँ, कपट कुचाल बहावै ॥१॥
या बिधि करम अधर्म करतु है, ऊसर बीज बोवावै ।
कोटि कला करि जतन करै जो, अंत सो निस्फल जावै ॥२॥
चौरासी लछ जीव जहाँ लगु, भ्रमि भ्रमि भटका खावै ।
सुरसरि[3] नाम सरूप को धारा, सो तजि छाँहि[4] गहावै॥३
सतगुरु बचन सत्त सुकिरित सोँ, नित नव प्रीति बढ़ावै ।
भीखा उमग्यो सावन भादौँ, आपु तँ आपु समावै ॥४॥

॥ शब्द १९ ॥

निज रँग रातहु हो धनियाँ[5] ।
तजि लोक लाज कुल कनियाँ[6] ॥टेक॥
या मैँ भला कछुक हमरिउ,
तुम्हरे सँग सदा रहनियाँ ।
भजनो सही तबहिँ परि है,
जब सकल करम भ्रम भनियाँ[7] ॥१॥

---

(१) आगे से। (२) आनन्द। (३) गंगा जी। (४) प्रतिबिंब, छाईं। (५) स्त्री।
(६) लाज। (७) नष्ट होना।

मैं अपनी उत्पति परलै दुख,
कहँ लग कहौं अनगिनियाँ ।
जो इत के सुख बिष सम जानै,
सो उत साध परनियाँ[1] ॥२॥
नहिं तौ जल बुंद होइ बिनसहुगे,
अबला[2] बुद्धि नदनियाँ ।
हरि बिनु सब रँग उतरि जाहिंगे,
मनि मोती कर पनियाँ ॥ ३ ॥
अनमिल मिलै बहुत हरखै,
ज्यौं पाइ मगन मन फनियाँ[3] ।
मनुष जन्म बड़ भाग मिलो,
गुरु ज्ञान ध्यान कै बनियाँ ॥ ४ ॥
जोगहिं कोल्हु जुगत लै पेरो,
बिषै सकल कर घनियाँ ।
या हरि रस को पियत कोई कोइ,
खोदि[4] दुइत को छनियाँ ॥ ५ ॥
व्यापक जहाँ तहाँ लग साहब,
जक्त बिदित दिल जनियाँ ।
मन भयो ब्रह्म जीव नहिं दोसर,
अबिगति अकथ कहनियाँ ॥ ६ ॥
हर दम नाम उठत अभि अंतर,
अनुभव मधुर बचनियाँ ।
सुनत सुनत दिल मौज जगी,
लगी सुरति निरति उनमुनियाँ ॥ ७ ॥

---

(१) भागना । (२) स्त्री । (३) साँप । (४) खोदी, तिनका और किनका ।

साहब अलख को कौन लखै,
सब थके देव मुनि जनियाँ ।
राजा राम सरूप आतमा,
दृष्टि मिली पिय रनियाँ ॥ ८ ॥
होइ निरास आसा सब त्यागै,
सो केवल निरबनियाँ ।
कह भीखा धनि भाग ताहि जेहिं,
लाभ नहीं कछु हनियाँ[1] ॥ ९ ॥

॥ शब्द २० ॥

समुझि गहो हरिनाम,
मन तुम समुझि गहो हरिनाम ॥ टेक ॥
दिन दस सुख यहि तन के कारन,
लपटि रहो धन धाम ॥ १ ॥
देखु बिचारि जिया अपने,
जत[2] गुनना गुनन बेकाम ॥ २ ॥
जोग जुक्ति अरु ज्ञान ध्यान तें,
निकट सुलभ नहिं लाम[3] ॥ ३ ॥
इत उत की अब आसा तजि कै,
मिलि रहु आतम राम ॥ ४ ॥
भीखा दीन कहाँ लगि बरनै,
धन्य घरी वहि जाम[4] ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

राम सौं करु प्रीति हे मन, राम सौं करु प्रीति ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवै,
अंत ढहो जिमि भीति[5] ॥ २ ॥

---

(१) हानि, घाटा। (२) जितना। (३) दूर। (४) पहर। (५) दीवार।

बूझि बिचारि देखु जिय अपनो,
हरि बिन नहिं कोउ होति[1] ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज,
धरु भीखा उर चीति ॥ ४ ॥

गुरु और नाम महिमा

॥ शब्द १ ॥

बीते बारह बरस उपजी राम नाम सों प्रीति ।
निपट लागि चटपटी मानो चारिउ पन गयो बीति ॥१॥
नहिं खान पान सोहात तेहिं छिन बहुत तन दुर्बल हुवा ।
घर ग्राम लाग्यो बिषम[2] धन मानो सकल हारो है जुवा ॥२॥
ज्यों मृगा जूथ[3] से फूटि परु चित चकित ह्वै बहुतै डरो ।
ढुंढ़त ब्याकुल बस्तु जनु कै[4] हाथ सों कछु गिरि परो ॥३॥
सतसंग खोजो चित्त सों जहँ बसत अलख अलेख ।
कृपा करि कब मिलहिंगे दहुँ[5] कहाँ कौने भेष ॥ ४ ॥
कोउ कहेउ साधू बहु बनारस भक्ति बीज सदा रह्यौ ।
तहँ सास्त्र मत को ज्ञान है गुरु भेद काहू नहिं कह्यौ ॥५॥
दिन दोय चारि बिचारि देख्यौं भरम करम अपार है ।
बहु सेव पूजा कीरतन मन माया रत ब्योहार है ॥ ६ ॥
चल्यौं बिरह जगाय छिन छिन उठत मन अनुराग ।
दहुँ[5] कौन दिन अरु घरी पल कब खुलैगो मम भाग ॥७॥
बहु रेखता अरु कबित्त साखी सब्द सौं मन मान ।
सोइ लिखत सीखत पढ़त निसु दिन करत हरि गुन गान ॥८॥

---

(१) मित्र। (२) जो सह्या न जाय। (३) झुंड। (४) जैसे। (५) धौं, न मालूम।

इक ध्रुपद बहुत बिचित्र सुनत भोग[1] पूछेउ है कहाँ।
नियरे भुरुकुड़ा ग्राम[2] जाके सब्द आपे है तहाँ ॥ ९ ॥
चोप लागी बहुत जाय के चरन पर सिर नाइया।
पूछेउ कहा कहि दियो आदर सहित मोहिँ बैसाइया॥१०
गुरु भाव बूझि मगन भयो मानो जन्म कौ फल पाइया।
लखि प्रीति दरद दयाल द्रवे[3] आपनो अपनाइया ॥११
आतमा निज रूप साँचो कहत हम करि कसम कै।
भीखा आपे आपु घट घट बोलता सोहमस्मिकै[4] ॥१२॥

॥ शब्द २ ॥

मनुवाँ सब्द सुनत सुख पावै ॥ टेक ॥
जेहिँ बिधि धुधुकत नाद अनाहद तेहिँ बिधि सुरत लगावै ॥ १ ॥
बानी बिमल उठत निसु बासर नेक बिलँब न लावै ॥२॥
पूरा आप करहि पर कारज नरक तेँ जीव बचावै ॥३॥
नाम प्रताप सबन के ऊपर बिछुरो ताहि मिलावै ॥४॥
कह भीखा बलि बलि सतगुरु की यह उपकार कहावै॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

मनुवाँ नाम भजत सुख लीया ॥ टेक ॥
जन्म जन्म के उरझनि पुरझनि समुझत करकत हीया।
यह तो माया फाँस कठिन है का धन सुत बित[5] तीया[6]॥१
सत्त सब्द तन सागर माहीँ रतन अमोलक पीया।
आपा तजै धसै सो पावै ले निकसै मरजीया[7] ॥२॥

---

(१) आखिरी कड़ी जिस मेँ बनाने वाले का नाम रहता है। (२) नाम एक गाँव का जहाँ गोविन्द साहब का स्थान था जिन से भीखा साहब ने उपदेश लिया। (३) प्रसन्न हुए। (४) सोहं अस्मि = वोह मैँ हूँ। (५) धन। (६) त्रिया, स्त्री। (७) समुद्र मेँ डुबकी लगा कर मोती निकालने वाला।

सुरति निरति लौलीन भयो जब दृष्टि रूप मिलि थोया[1] ।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु[2] जुक्ति जमावो बोया ॥३॥
सतगुरु भये दयाल तताच्छिन[3] करना था सो कीया ।
कहै भीखा परकासो कहिये घर अरु बाहर दीया[4] ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

धुनि बजत गगन महँ बीना ।
जहँ आपु रास रस भीना ॥ टेक ॥

भेरी[5] ढोल संख सहनाई, ताल मृदंग नवीना ।
सुर जहँ बहुतै मौज सहज उठि, परत है ताल प्रबीना ॥१॥
बाजत अनहद नाद गहागह, धुधुकि धुधुकि सुर झीना ।
अँगुली फिरत तार सातहु पर, लय निकसत भिन भीना[6] ॥२॥
पाँच पचीस बजावत गावत, निर्त चारु[7] छबि दीना ।
उघटत तननन धिंतां धिंतां, कोउताथेइ थेइ तत कीना ॥३॥
बाजत जल तरंग बहु मानो, जंत्री जंत्र कर लीन्हा ।
सुनत सुनत जिव थकित भयो, मानो ह्वै गयो सब्द अधीना ॥४॥
गावत मधुर चढ़ाय उतारत, रुनझुन रुनझुन धीना[8] ।
कटि किंकिनि पगु नूपुर की छबि, सुरति निरति लौलीना ॥५॥
आदि सब्द ओंकार उठतु है, अटुट रहत सब दीना[9] ।
लागी लगन निरंतर प्रभु सौं, भीखा जल मन मीना ॥६॥

॥ शब्द ५ ॥

गुरु सब्द सरोवर घाट सुनत मन चुभुकैला[10] ॥टेक॥
पाँच पचीस गुन गावहीं, ह्वाँ ताल मृदंग उबाट,
कछुक झुन घुमकैला[11] ॥ १ ॥

---

(१) थिर हुआ। (२) पेड़। (३) तुर्त। (४) चिराग़। (५) एक बाजे का नाम। (६) भीनी भीनी। (७) सुन्दर। (८) ताधिन ताधिन। (९) सब दिन यानी सदा एक रस रहता है। (१०) डुबकी लगाता है। (११) गुंकार की आवाज़ आती है।

गगन मँडल में रास रचो, लगि दृष्टि रूप कै साँट[1],
देखत मन पुलकैला ॥ २ ॥
नाद अनाहद खान खुलो जब, सुन्न सहर में हाट,
धुधुकि धुन धुधुकैला ॥ ३ ॥
भीखा के प्रभु बैठे देखत, भाव सहज सुख खाट,
मगन मन हुलसैला ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

गुरु दाता छत्री सुनि पाया ।
सिष्य होन द्विज[2] जाचक आया ॥ १ ॥
देखत सुभग[3] सुंदर अति काया ।
बचन सप्रेम दीन पर दाया ॥ २ ॥
बूझि बिचारि समुझि ठहराया ।
तन मन सौं चरनन चित लाया ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गत माया[4] ।
कृपा करहिं जानहिं निज जाया[5] ॥ ४ ॥
साहब आपै आप निराल ।
आतम राम को नाम गुलाल[6] ॥ ५ ॥
सर्ब दान दियो रूप बिचारी ।
पाय मगन भयो बिप्र[7] भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं डाहतु है मन माया ॥ टेक ॥
एकै सब्द ब्रह्म फिरि एकै, फिरि एकै जग छाया ।
आतम जीव करम अरुझाना, जड़ चेतन बिलमाया ॥१॥

---

(१) मिलाप, लपेट । (२) भीखा साहब जाति के ब्राह्मण थे और उन के गुरु गुलाल साहब छत्री । (३) सुभ अंग । (४) माया छूटती जाती है । (५) पुत्र । (६) भीखा साहब के गुरु का नाम । (७) ब्राह्मण ।

परमारथ को पीठ दियो है, स्वारथ सनमुख धाया ।
नाम नित्य तजि अनितै भावै, तजि अमृत बिष खाया॥२॥
सतगुरु कृपा कोऊ कोउ बाचै, जो सोधै निज काया ।
भीखा यह जग रतो[१] कनक पर, कामिनि हाथ बिकाया॥३॥

॥ शब्द ८ ॥

मेरो हित सोइ जो गुरु ज्ञान सुनावै ॥ टेक ॥
दूजी दृष्टि दुष्ट सम लागै, मन उनमेख[२] बढ़ावै ।
आतम राम सूछम सरूप, केहि पटतर[३] दै समझावै ॥१॥
सब्द प्रकास बिनाहिं[४] जोगबिधि, जगमग जोति जगावै ।
धन्य भाग ता चरन रेनु ले, भीखा सीस चढ़ावै ॥ २ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जो सत सब्द लखावै सोइ आपन हित हेरा ॥ टेक ॥
यहि सिवाय परपंच कर्म बस, सकल दुष्ट भ्रम घेरा ॥१॥
ब्रह्म सरूप प्रगट घट घट मैं, अनचिन्हार सब केरा ॥२॥
जेहिं बिधि कहत बेदांत, संत मुख सो कहि करत निबेरा ॥३
तन मन वार तिनहिं पर दीन्हों, पर्यो चरन बिच डेरा ॥४
भीखा जाहि मिलैं गुरु गोबिंद, वै साहब हम चेरा ॥५॥

॥ शब्द १० ॥

को लखि सकै राम को नाम ॥ टेक ॥
देइ करि कौल करार बिसारो,
जियना बिनु भजन हराम ॥ १ ॥
बरनत बेद बेदांत चहूँ जुग,
नहिँ अस्थिर पावत बिसराम ॥ २ ॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत,
भटकत फिरत भोर अरु साम ॥ ३ ॥

---

(१) मोहित हुआ । (२) तरंग । (३) उपमा । (४) बग़ैर ।

सुर नर मुनि गन पचि पचि हारे,
अंत न मिलत बहुत सो लाम[1] ॥ ४ ॥
साहब अलख अलेख निकट हीं,
घट घट नूर ब्रह्म को धाम ॥ ५ ॥
खोजत नारद सारद अस अस,
जातु है समय दिवस अरु जाम ॥ ६ ॥
सुगम उपाय जुक्ति मिलबे की,
भीखा इह सतगुरु से काम ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

देह धरि जन्म वृथा गैलो ॥ टेक ॥
पाँच तत्त गुन तीनि संग लिये,
कबहिँ न सरनागत अैलो ॥ १ ॥
साधु संग कबहूँ नहिँ कीन्हो,
माया बस सब दिन गैलो ॥ २ ॥
ऐसहि जन्म सिरात[2] रे प्रानी,
राम नाम चित नहिँ कैलो ॥ ३ ॥
कियो करार नाम भजिबे को,
अनमिल ब्याह गवन भैलो ॥ ४ ॥
सतगुरु सब्द हिये महँ राखो,
हर दम लाभ उदै भैलो ॥ ५ ॥
भीखा को मन थीर होत नहिँ,
सतगुरु सत्त पच्छ धैलो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

होहु सु केवल राम की सरन,
ना तो जन्म औ फेरि मरन ॥ १ ॥

---

(१) दूर। (२) बीतना।

तीरथ ब्रत आदि देवा पूजन जजन,
सत नाम जाने बिना नर्क परन ॥ २ ॥
सब्द प्रकास जाने नैन स्रवन,
गूँगा गुड़ को हिसाब कहे सो कवन ॥ ३ ॥
अलख के लखन को अजपा जपन,
अबिगति गतिन को अकथ कथन ॥ ४ ॥
देह न ग्रेह आदि कर्म करन,
पुरुष पुरान जाको बिदित अरन ॥ ५ ॥
भीखा जल थल नभ रमता रमन,
ताके मिलिबे को गुरु कह्यो सो जतन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

नामै चाँद सूर दिन राती। नामै किरतिम[1] की उतपाती[2] ॥१॥
नाम सरसुती जमुना गंगा। नामै सात समुद्र तरंगा ॥२॥
नामै गहिर अगूढ़ अथाह। असरनसरनको चरन निबाह ॥३॥
मूल गायत्री ओअंकार। तत तुरिया पद सूच्छम सार ॥४॥
पलक दरियाव पुरो हरिनाम। नामै ठाकुर सालिगराम ॥५॥
सिव ब्रह्मा मुनि सबको नायक। बीठल नाथ साहब सुखदायक ॥६॥
नामै पानी नामै पवना। ररंकार मंगल सुख रवना[3] ॥७॥
नामै धरती नाम अकास। नामै पावक तेज प्रकास ॥८॥
नाम महादेवन को देवा। नामै पूजा करता सेवा ॥९॥
नाम जक्त गुरु नामै दाता। नामै अज[4] बिज्ञान बिधाता ॥१०॥
नाम सुमेर महा गंभीर। नामै पारस मलयागीर ॥११॥
नाम असोक सोक सौं रहिता। कलपद्रुम नामहिं को कहिता ॥१२॥

---

(१) माया। (२) उत्पत्ति। (३) बिलास। (४) ब्रह्मा।

नामै रिद्धि सिद्धि को करता। नामै कामधेनु ह्वै भरता ॥१३॥
नामै अर्ध उर्ध ह्वै आये। चारि खान मैं नाम समाये॥१४॥
धनराज धनंजै धर्महुं ओई। नामै अगन गनै का कोई ॥१५॥
नामै प्रानायाम कहाये। सोहं सोहं नामै गाये॥ १६ ॥
नामै सुंदर नूर जहूर। नामै लाये निकट हजूर ॥ १७ ॥
नाम अनादि एक को एक। भीखा सब्द सरूप अनेक॥१८॥

जोगी और जोगीश्वर महिमा

॥ शब्द १ ॥

भजन तेँ उत्तम नाम फकीर।
छिमा सील संतोष सरल चित दरदवंद पर पीर ॥ टेक ॥
कोमल गदगद गिरा[1] सोहावन प्रेम सुधा रस छीर।
अनहद नाद सदा फल पायो भोग खाँड़ घृत खीर ॥१॥
ब्रह्म प्रकास को भेख बनायो नाम मेखला चीर।
चमकत नूर जहूर जगामग ढाँके सकल सरीर ॥ २ ॥
रहनि अचल अस्थिर कर आसन ज्ञान बुद्धि मति धीर।
देखत आतम राम उघारे ज्यौँ दरपन मद्धे हीर ॥ ३ ॥
मोह नदी भ्रम भँवर कठिन है पाप पुन्य दोउ तीर।
हरि जन सहजे उतरि गये ज्योँ सूखे ताल को भीर[2] ॥४
जग परपंच करम बहतो है जैसे पवन अरु नीर।
गुरु गम सब्द समुद्रहिँ जावे परत भयो जल थीर ॥ ५ ॥
कोलि करत जिय लहरि पिया सँग मति बड़ गहिर गँभीर।
ताहि काहि पटतरो[3] दीजै जिन तन मन दियो सीर ॥६॥
मन मतंग मतवार बड़ा है सब ऊपर बल बीर।
भीखा हीन मलीन ताहि को छीन भयो जस जीर ॥ ७ ॥

---

(१) बानी। (२) छिछला पानी। (३) उपमा।

॥ शब्द २ ॥

सतगुरु साहब नाम पारसी, पारस मेँ चित लावै ।
जाहि नाम तेँ सिव सनकादिक, ब्रह्मा बिस्नु कहावै ॥१॥
ता के सुर नर मुनि गन देवा, सेवा सुमिरन ध्यावै ।
मध्य सरस्वति गंगा जमुना, सन्मुख सीस नवावै ॥२॥
त्रिस्ना राग द्वेस नहिँ तहवाँ, जहवाँ सोहं बोलै ।
ज्ञान बोध बिनु दृष्टि बिलोकै, उर्ध कपाटहिँ खोलै ॥३॥
मूल पेड़ अरु साखा पत्र नहिँ, फूल बिना फल लागे ।
जंत्र बिना जंत्री धुनि सुनिये, सब्द अभय पद जागे॥४॥
ता अस्थान मकान किये, होय नाद बिंद को मेला ।
आतम देह समान बिचारो, जोइ गुरु सोइ चेला ॥५॥
सो है फाजिल संत महरमी[1], पूरन ब्रह्म समावै ।
एकै सोन[2] बहुल बिधि गहना, समुझै द्वैत नसावै ॥६॥
ता की सरन साँच है जानहि, अजर अमर जन सोई ।
उटन बिटन[3] बरतन माटी को, चेतन मरै न कोई ॥७॥
अनुभव प्रेम उज्जल परमारथ, रूप अलग दरसावै ।
कह भीखा वह जागत जोगी, सहज समाधि लगावै॥८॥

॥ शब्द ३ ॥

गुरु सब्द कवन गुन गुनी,
तहँ उठत लहरि पुनि पुनी ॥ टेक ॥
पाँच घोड़ चंचल घट भीतर,
मन गयंद बड़ खुनी[4] ॥ १ ॥
ज्ञान अगिन तन कुंड सकल धरि,
जोग जुक्ति करि हुनी[5] ॥ २ ॥

---

(१) भेदी । (२) सोना । (३) बनना और बिगड़ना । (४) हाथी रूपी मन बड़ा खूनी है । (५) होम ।

सुरति निरति अंतर लै लावो,
गगन गरज धुनि सुनी ॥ ३ ॥
जन भीखा तेहिँ पदहिँ समाने,
धन[1] जोगेस्वर मुनी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साधो सब महँ निज पहिचानी,
जग पूरन चारिउ खानी ॥१॥
अविगत अलख अखंड अमूरति,
कोउ देखे गुरु ज्ञानी ॥२॥
ता पद जाय कोऊ कोउ पहुँचे,
जोग जुक्ति करि ध्यानी ॥३॥
भीखा धन[1] जो हरि रँग राते,
सोइ है साधु पुरानी ॥४॥

बिनती

॥ शब्द १ ॥

प्रभु जी करहु अपनो चेर ।
मैं तो सदा जनम को रिनिया, लेहु लिखि मोहिँ केर ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह यह, करत सबहिन जेर ।
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, परे करम के फेर ॥२॥
सिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, ऐसे ऐसे ढेर ।
खोजत सहज समाधि लगाये, प्रभु को नाम न नेर ॥३॥
अपरंपार अपार है साहब, होय अधीन तन हेर ।
गुरु परताप साध की संगति, छुटै सो काल अहेर[2] ॥४॥
त्राहि त्राहि सरनागत आयो, प्रभु दरवो[3] यहि बेर ।
जन भीखा को उरिन कीजिये, अब कागद जिन हेर ॥५॥

---

(१) धन्य । (२) शिकार । (३) दया कीजिये ।

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी नहिँ आवत मोहिँ होस ।
राम नाम मन मैँ नहिँ आवत काकर करोँ भरोस ॥१॥
माला तिलक बनाय बहुत बिधि बिन बिस्वास कै तोस[1]।
सुमिरन भजन साँच नहिँ कीन्हो मन माने को पोस॥२॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान ध्यान मैँ लगै तजै तन जोस ।
यह संसार काम नहिँ आवै जैसे त्रन पर ओस ॥३॥
खोजत सब कोइ अंत न पावै काला मैँ का कोस[2] ।
आतम राम सरूप निकट हीं माल सुंदर बड़ ठोस ॥४॥
भीखा को मन कपट कुचाली दिन दिन होइ फरमोस[3] ।
कारन कवन सब्द होइ मेला यही बड़ा अपसोस ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

अस करिये साहब दाया ॥टेक॥
कृपा कटाच्छ होइ जोंहि तेँ प्रभु, छूटि जाय मन माया ॥१॥
सोवत मोह निसा निस बासर, तुमहीं मोहिँ जगाया ॥२॥
जनमत मरत अनेक बार, तुम सतगुरु होय लखाया ॥३॥
भीखा केवल एक रूप हरि, ब्यापक त्रिभुवन राया ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

सरनागत दीन दयाला की,
प्रभु करु आयसु[4] प्रतिपाला की ॥टेक॥
जो जिय महँ निस्चै आवै,
तौ संक[5] कर्म नहिँ काला की ॥१॥
ज्ञान ध्यान कहा जोग जुक्ति है,
चीन्ह तिलक अरु माला की ॥ २ ॥

---

(१) सामान। (२) अहं लिये हुए मालिक को ढूँढ़ते हैँ इस से उस तक नहीँ पहुँचते—रास्ता काला कोस अर्थात बहुत लंबा हो जाता है। (३) फ़रामोश, भूल। (४) आज्ञा। (५) शंका, डर।

जा पर होहु दयाल महा प्रभु,
धन्य भाग तेहि लाला[1] को ॥ ३ ॥
पिता अनादि कृपा करिकै,
अपराध छिमौ निज बाला को ॥ ४ ॥
भीखा मन परलाप[2] बड़ा,
कहि साँच बजावत गाला को ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

यार हो हँसि बोलहु मोसौं,
भरम गाँठि छूटै प्रभु तोसौं ॥ १ ॥
पालन करि आये मो कहँ तुम,
खाय जियाय कियो घर पोसो ॥ २ ॥
बचन मेटि मैं कहौं गरज बसि,
दरदवंद प्रभु करौ न गोसो[3] ॥ ३ ॥
हो करता करमन के दाता,
आगे बुधि आवत नहिं होसो ॥ ४ ॥
तुम अंतरजामी सब जानो,
भीखा कहा करहि अपसोसो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

दीजै हो प्रभु बास चरन मैं, मन अस्थिर नहिं पास ॥१॥
हौं सठ सदा जीव को काँचो, नहिं समात उर साँस ॥२॥
भीखा पतित जानि जनि छोड़ो, जक्त करैगो हाँस ॥३॥

॥ शब्द ७ ॥

मोहिं राखो जी अपनी सरन ॥ टेक ॥
अपरम्पार पार नहिं तेरो, काह कहौं का करन ॥ १ ॥

(१) भाग्य, तक़दीर। (२) बकवाद। (३) गुस्सा, या फ़ारसी का लफ़ज़ गोश जिस का अर्थ कान है।

मन क्रम बचन आस इक तेरी, होउ जनम या मरन ॥२॥
अबिरल भक्ति के कारन तुम पर, है ब्राम्हन देउँ धरन[१] ॥३॥
जन भीखा अभिलाख इहो नहिं, चहौं मुक्ति गति तरन ॥४॥

॥ शब्द ८ ॥

प्रभु दीन दयाल दया तु करो,
मन माया को उनमेख[२] हरो ॥ टेक ॥
बोलत अपरम्पार है साहब,
कपट अविद्या भरम छरो[३] ।
पेट आन मुख आन बतावत,
यहि जग को परपंच जरो ॥ १ ॥
अधम-उधारन सोक-नसावन,
उदय-करावन नाम धरो ।
त्राहि त्राहि प्रभु सरन तिहारी,
यहि बाना को लाज करो ॥ २ ॥
रमिता राम सकल घट पूरन,
नैनन नूर जहूर झरो ।
भीखा केवल ब्रह्म बिराजत,
आतम फूल सरूप फरो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

करुनामय हरि करुना करिये,
कृपा कटाच्छ ढरन ढरिये ॥ टेक ॥
भक्तन को प्रतिपाल करन को,
चरन कँवल हिरदै धरिये ॥ १ ॥
व्यापक पूरन जहाँ तहाँ लगु,
रीतो[४] न कहूँ भरन भरिये ॥ २ ॥

---

(१) धरना । (२) कुचाल । (३) ठग लिया । (४) ख़ाली ।

अब की बार सवाल राखिये,
नाम सदा इक फर[1] फरिये ॥ ३ ॥
जन भीखा के दाता सतगुरु,
नूर जहूर बरन बरिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

ए साहब तुम दीनदयाला ।
आयहु करत सदा प्रतिपाला ॥ १ ॥
केतिक अधम तरे तुम चरनन ।
करम[2] तुम्हार कहा कहि जाला[3] ॥ २ ॥
मन उनमेख[4] छुटत नहिँ कबहीं,
सौच[5] तिलक पहिरे गल माला ॥ ३ ॥
तनिकौ कृपा करहु जेहिँ जन पर,
खुल्यौ भाग तासु को ताला ॥ ४ ॥
भीखा हरि नटवर[6] बहु-रूपी,
जानहिँ आपु आपनी काला[7] ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तुम धनि धनि साहब आपे हो,
तहवाँ पुन्न न पापे हो ॥ टेक ॥
जत निरगुन तत सरगुन साँईं,
केवल तुम परतापे हो ॥ १ ॥
रमिता राम तुम अंतरजामी,
सोहं अजपा जापे हो ॥ २ ॥
अद्वै ब्रह्म निरंतर बासी,
प्रगट रूप निज ढाँपे हो ॥ ३ ॥

(१) फल । (२) बख़्शिश । (३) कहा जा सकता है । (४) कुचाल । (५) बदन की सफ़ाई, नहाना वग़ैरह । (६) नट । (७) कला, चरित्र ।

चहुँ जुग कितकिर्त कीयो तुम,
जेहि सुकर[1] सिर थापे हो ॥ ४ ॥
भीखा सिसु[2] अवलंब[3] रावरो,
तुमहिँ माय अरु बापे हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

गुरु राम नाम कैसे जानौँ, मन करत बिषै कुटिलाई ।
काम क्रोध मद लोभ मोह तेँ, सवकस[4] कबहुँ न पाई ॥१॥
पाप पुन्न जुग[5] बिर्छ लगे हैँ, जन्म मरन फल पाई ।
डार पात के फिरत फेर मेँ, चेतन नाम गँवाई ॥२॥
जग परपंच को जाल पसारो, चारिउ खान बझाई ।
सोई बाचै याहि फंद से, जेहि आपु से लेहिँ छोड़ाई ॥३॥
आरत[6] है जन बिनय करतु है, सरन सरन गोहराई ।
भीखा कहै कुफुर[7] तब टूटै, जब साहब करहिँ सहाई ॥४॥

प्रेम और प्रीति

॥ शब्द १ ॥

प्रीति की यह रीति बखानौ ॥ टेक ॥
कितनौ दुख सुख परै देह पर, चरन कमल कर ध्यानौ ॥१॥
हो चेतन्य बिचारि तजो भ्रम, खाँड़ धूरि जनि सानौ ॥२॥
जैसे चात्रिक स्वाँति बुन्द बिनु, प्रान समरपन ठानौ ॥३॥
भीखा जेहिँ तन राम भजन नाहिँ, काल रूप तेहिँ जानौ ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

कहा कोउ प्रेम बिसाहन[8] जाय ।
महँग बड़ा गथ[9] काम न आवै, सिर के मोल बिकाय ॥१॥

---

(१) जिस के सीस पर तुमने अपना सुन्दर हाथ धरा उसे चारो जुग मेँ कृतार्थ कर दिया । (२) बालक । (३) सहारा । (४) सावकाश । (५) जुगल, दो । (६) दीन । (७) नास्तिकता । (८) मोल लेना, ख़रीदना । (९) सोच समझ ।

तन मन धन पहिले अरपन करि, जग के सुख न सोहाय।
तजि आपा आपुहिँ ह्वै जीवै, निज अनन्य[1] सुखदाय॥२॥
यह केवल साधन को मत है, ज्योँ गूँगे गुड़ खाय।
जानहिँ भले कहै सो कासोँ, दिल की दिलहिँ रहाय॥३॥
बिनु पग नाच नैन बिनु देखै, बिन कर ताल बजाय।
बिन स्रवन धुनि सुनै बिबिधि बिधि, बिन रसना गुन गाय॥४
निर्गुन मेँ गुन क्योँकर कहियत, ब्यापकता समुदाय[2]।
जहँ नाहीँ तहँ सब कुछ दिखियत, अँधरन की कठिनाय॥५
अजपा जाप अकथ को कथनो, अलख लखन किन पाय।
भीखा अविगति की गति न्यारी, मन बुधि चित न समाय॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

जब छूटे मन उनमेखा[3] निरदोखा सो ॥टेक॥
जग जानत अउरा बउरा,
तेहि राग नहीँ कहुँ दोषा, जन मोषा[4] सो ॥१॥
वा कि गति बिपरीत सकल है,
नर कपूत कर लेखा, अस जोखा सो ॥२॥
कहत सबै यह पेट लागि[5],
कला करत धरि भेषा, तन पोषा सो ॥३॥
सो अपने साहब सोँ राजी,
प्रेम भक्ति कै रेखा, बड़ जोखा सो ॥ ४ ॥
हरि भक्तन अमृत फल चाखयो,
पाइ गयो कहुँ सेखा,[6] सुठि[7] चोखा सो ॥५॥
भीखा तेहिँ जन की का कहिये,
जिन समझो अलख अलेखा, नहिँ धोखा सो ॥६॥

---

(१) ये मिलौनी, केवल। (२) सब जगह। (३) उपद्रव। (४) मुक्ति। (५) पेट के निमित्त। (६) शेख़, गुरू। (७) सुंदर।

॥ शब्द ४ ॥

पिया मोर बैसल[1] माँझ अटारी, टरै नहिँ टारी ॥टेक॥

काम क्रोध ममता परित्यागल,
नहिँ उन सहल जगत कै गारी ॥ १ ॥

सुखमन सेज सुंदर बर राजित,
मिले हैँ गुलाल भिखारी[2] ॥ २ ॥

भेद बानी

॥ शब्द १ ॥

सतगुरु अचरज बस्तु दिखाई, नैन सैन करि जुक्ति बताई॥१॥
अबरन बरनन मैँ नहिं आई, मरै जियै आवै नहिँ जाई॥२॥
सब्द त्रिगुन[3] कहि सके न सिराई, जहवाँ निरंजनराई॥३॥
सचर अचर जल थल जित देखा, केवल एक न दोसर भीखा॥४

॥ शब्द २ ॥

मैँ कहूँ कौन जी हाल री, रूप अलख देखे बिना॥टेक॥

जन्मत मरत अनेक बार तन,
फिरि फिरि मारत काल री ॥ १ ॥

जात चलो दम दाम सबै कछु,
नजरि न आवत माल री ॥ २ ॥

बिना मिलन अनमिल साहब सोँ,
कर मींजत धुनि भाल[4] री ॥ ३ ॥

थकित भयो मन बुद्धि जहाँ लगु,
कठिन पस्यो उर साल री ॥ ४ ॥

---

(१) बैठा। (२) माँगता अर्थात भीखाजी को। (३) बेद बचन। (४) सिर धुन कर।
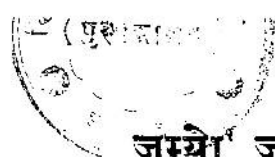
जम्यो[1] जुगति मैं गाछ[2] अनाहद,
धुनि सुनि मिटि जंजाल री ॥ ५ ॥
कली बैठि निज मूल सुरति पर,
लखि जन होत निहाल री ॥ ६ ॥
भीखा आतम फूल अजब,
गुरु राम को नाम गुलाल री ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

ऐसो राम कवनि बिधि जानी ।
दृष्टि मुष्टि कबहीं नहिं आवत,
जनम मरन जुग बहुत सिरानी ॥ १ ॥
अगम अगोचर बसत निरंतर,
जा के सीस न पाँव न पानी[3] ।
निर्गुन निर्बिकार सुख सागर,
अपरम्पार अखंडित बानी ॥ २ ॥
ईसुर के केतहि[4] ईसुरता,
साहब अविगत अकथ कथानी ।
अगह अकह अनभव अन मूरति,
थाके सकल खोजि मुनि ज्ञानी ॥ ३ ॥
अलख को लखे अदेख को देखे,
व्यापक पूरन चारिउ खानी ।
निरंकार निरुपाधि निरामय,[5]
भीखा रंग न रूप निसानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

कोउ लखि रूप सब्द सुनि आई ॥ टेक ॥
अविगत रूप अजायब बानी, ता छबि का कहि जाई ॥१॥

---

(१) उगा । (२) पेड़ । (३) हाथ । (४) बहुत । (५) निर्माया ।

यह तौ सब्द गगन घहरानो, दामिनि चमक समाई॥२॥
वह तौ नाद अनाहद निसदिन, परखत अलख सोहाई॥३॥
यह तौ बादर उठत चहूँदिसि, दिवसहिँ सूर छिपाई॥४॥
वह तौ सुन्न निरंतर धुधुकत, निज आतम दरसाई॥५॥
यह तौ झरतु है बूंद झराझर, गरजि गरजि झरि लाई॥६॥
वह तौ नूर जहूर बदन पर, हरदम तूर बजाई ॥ ७ ॥
यह तौ चारि मास को पाहुन, कबहुं नाहिँ थिरताई॥८॥
वह तौ अचल अमर की जै जै, अनंत लोक जस गाई॥९॥
सतगुरु कृपा उभै[1] बर पायो, स्रवन दृष्टि सुखदाई॥१०॥
भीखा सो है जन्म सँघाती, आवहि जाहि न भाई॥११॥

॥ शब्द ५ ॥

ए हरि मीत बड़े तुम राजा ।
व्यापक जहाँ तहाँ लगु तुम्हरे,
हुकुम बिना कहुँ सरे न काजा ॥ टेक ॥

तिरगुन सूबा मौज बनाया, भिन्न भिन्न तहँ फौज रखाया।
हय[2] गय[3] रथ सुखपाल बहूता, माया बढ़ी करै को कूता ।
कहत बनै नहिँ अनघड़ साजा, ए हरि मीत० ॥१॥
चारोदिसाकनातगड़ाहै, आसमान तंबू बिन चोब खड़ा है ।
पानी अगिनि पवन है पायक, जो कछु काम सो करिबे लायक ।
अनहद ढोल दमामा बाजा, ए हरि मीत० ॥ २ ॥
तारागन पैदल समुदाई, अज्ञा ले जहँ तहँ चलि जाई ।
चाँद सूर निस बासर आई, आवत जात मसाल दिखाई ।
ध्रुव कियो थीर अचल मन धाजा[4], ए हरि मीत० ॥३॥

---

(१) दो । (२) घोड़ा । (३) हाथी । (४) ध्वजा ।

सहजादा है मन बुधि काला, कीन्हेव सकल जगत पैमाला ।
कालबड़ा उमराव है भारो, डरे सकल जहँलग तन धारी ।
तुम्हरो दंड सकल सिर ताजा, ए हरि मीत० ॥ ४ ॥
सत्त सतोगुन मंत्र दृढ़ावा, ज्ञान आदि दे पुत्र बुलावा ॥
अमल करहु तुम जग मँ जाई, फेरहु केवल राम दोहाई ।
नाम प्रताप प्रकास को छाजा, ए हरि मीत० ॥५॥
चतुरंगिनि उज्जल दल देखा, जोग बिराग बिचार को लेखा।
छिमा सील संतोष को भाऊ, परमारथ स्वारथ नहिं चाऊ।
स्वारथ रत पर पारहु गाजा[1], ए हरि मीत० ॥६॥
रज गुन तम गुन कीन्ह्यो मेला, सबहीं भयो सतो गुन चेला ।
हम तुम आइ कछू नहिं कीन्हा, अज्ञा ईस सीस पर लीन्हा ।
मरत बहुत डर आपु की लाजा, ए हरि मीत० ॥ ७ ॥
पठयौ काम क्रोध मद लोभा, जातेँ कीन्ह सकल तन छोभा ।
केवल नाम भजे सो बाचै, नहिं तो और सकल मन काचै ।
भीखा तुम बिन कौन निवाजा[2], ए हरि मीत बड़े तुम राजा॥८

॥ शब्द ६ ॥

बसु पुरुष पुरान अपारा, तब नहिं दूसर बिस्तारा ॥टेक॥
हफ़्तमँ[3] इच्छा अविगत बोलै, सत्त सब्द निरधारा ॥१॥
छठयँ ओअं अनहद तुरिया, पँचयँ अकासहिं भारा ॥२॥
चौथे बायु सुन्न को मेला, तीजे तेज बिचारा ॥ ३ ॥
दूजे अप[4] बीजा पैदाइस, कीन्ह चहै संसारा ॥ ४ ॥
भीखा मूल प्रथी को भाजन[5], ता मँ ले सब धारा ॥ ५ ॥

---

(१) जो स्वार्थी है उस पर बिजली गिराओ । (२) दया या पर्वरिश करना ।
(३) सातवाँ । (४) पानी । (५) बरतन ।

॥ शब्द ७ ॥

बोलता साहब लो लो लोई, मिथ्या जगत सत्य इक वोई॥१
नाम खेत जन प्रीति कियारी, जीव बीज तापैर[1] पसारी॥२
सेवा मन उनमुनी लगाया, लो लो जा जामलि[2] गुरदाया॥३
जोग बढ़नि जल बिषै दवाई, बिरही अंग जरद होइ आई॥४॥
गगन गवन मन पवन झुराई, लालो रंग परम सुखदाई ॥५
सुरति निरति कै मेला होई, नाद औ बिंद एक सम सोई॥६
बाजत अनहद तूर अघाई, लालो सुनत बहुत सुख पाई॥७
अनुभव बालि[3] उदित उजियारा, आदि अंत मध एक निहारा ॥८॥
सुद्ध सरूप अलख लख पाई, लालो दरसन कीबलि जाई॥९॥
पाप पुन्न गत[4] कर्म निनारा, केवल आतम राम अधारा॥१०॥
भीखा जेहिँ कारन जग आये, लालो जनम सुफल करि पाये११

आरती

(१)

गुरु गोबिंद की करत आरती ॥ १ ॥
दिन दिन मंगल सद बिहारती ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति तन मनहिं गारती ॥ ३ ॥
जोग ध्यान दीपक सँवारती ॥ ४ ॥
बाती सुत सनेह बरि[5] डारती ॥ ५ ॥
सतगुरु बिरह अगिन उद्गारती[6] ॥ ६ ॥
पाप पुन्न सब करम जारती ॥ ७ ॥

---

(१) छींटकर। (२) उगी, जमा। (३) बाल या फल। (४) रहित। (५) बट कर। (६) जगाती, बालती।

भाव थार भक्ती सोँ धारती ॥ ८ ॥
अभि अंतर हरि नाम उचारती ॥ ९ ॥
तजि बिषया रति चरन निहारती ॥ १० ॥
भीखा आरति सहज उतारती ॥ ११ ॥

(२)

हरि गुरु चरन किये परनाम ।
आरत जन पावहिं बिसराम ॥ १ ॥
सतगुरु किरपा हरि को नाम ।
भजन आरती आठो जाम ॥ २ ॥
सब्द प्रकास तिल के अस्थाम[१] ।
घट घट गुरु गोबिंद को धाम ॥ ३ ॥
ब्रह्म सरूप गोर नहिँ स्याम ।
सुद्ध अकास नेर[२] नहिँ लाम ॥ ४ ॥
सतगुरु जुक्ति करायो ठाम ।
भीखा आला दृष्टि मुकाम ॥ ५ ॥

(३)

नौबति ठाकुरद्वार बजावै ।
पाँचो सहित निरति करि गावै ॥ १ ॥
सतगुरु कृपा जाहि तेहि पासे ।
आरति करत मिलन की आसे ॥ २ ॥
ज्ञान दीप परकास सोहाती ।
दिब्य दृष्टि फेरत दिन राती ॥ ३ ॥
जाचक सुरति निरति पहँ जावो ।
दान सरूप आतमा पावो ॥ ४ ॥

---

(१) स्थान । (२) पास ।

भीखा एक दुइत का भयऊ।
सर्प समाय रज्जु महँ गयऊ ॥ ५ ॥

(४)

आरति बिनै करत हरि भक्ता।
सुजस रैन दिन सोवत जगता ॥ १ ॥
चित चेतन्न ब्रह्म अनुरक्ता[1] ।
धुनि सुनि मगन जीव आसक्ता[2] ॥ २ ॥
सुद्ध सरूप नूर लखि लगता।
नाम समुद्र लहरि महँ पगता ॥ ३ ॥
बायेँ सो दाहिने पाछि सोइ अगता[3] ।
अर्ध उर्ध सम घटत न बढ़ता ॥ ४ ॥
सतगुरु ज्ञान भक्ति को दाता।
पावत भीख भिखा जोइ जाता ॥ ५ ॥

बारह मासा

कोटि करै जो कोय, सतगुरु बिन प्रभु ना मिलैं ॥टेक॥
मास असाढ़ जन्म सुभ, आदर अलप सुभाव।
करम भरम जल अंतर, प्रभु सोँ परल दुराव[4] ॥ १ ॥
सावन सहज सोहावन, गरजै औ घहराय।
बुंद झलाझलि झलकै, हरि बिनु कछु न सोहाय ॥२॥
भादोँ भवन भयंकर, सुनि रैनी उतपात।
कहिँ कहिँ दमकै दामिनी, डरपत है बहु गात ॥ ३ ॥
मास कुवार अवधि दिन, बरखा बरखि सिराय।
नैन निमिख[5] नाहीँ लगै, सिर धुनि धुनि पछिताय ॥४॥

---

(१) अनुराग से परिपूर्ण। (२) बिह्वल। (३) पीछे सोई आगे। (४) दूरी।
(५) छिन मात्र।

कातिक मास उदासित, सुरति चललि परदेस।
निरति मिलन के कारन, कब धौं मिटहिं कलेस ॥५॥
अगहन मास जु ध्यान धन, खेती करत किसान।
नाम बीज लव लावै, बोवै सो लवै[1] निदान ॥ ६ ॥
पूस जु मास हवाल है, जाड़ जाड़ नियराय।
ओढ़न जब हरि मिलन को, आनँद प्रेम अघाय ॥७॥
माघ मास जु बसंत रितु, फुल्यो काया बन झारि।
सगुन सँजोग बिबिधि तन, मिलि है देव मुरारि ॥८॥
फागुन मास जु राग रँग, गुरु के बचन अस्थूल।
नाद बिंद इक सम भयो, जीव सीव करि मूल ॥९॥
चैत मास निर्मल तनै, द्रुम[2] नव पल्लव[3] लेत।
रूप अरुन[4] मृदु[5] सकल है, निज आतम छबि देत ॥१०॥
बैसाख मास फल पूरन, जोग जुक्ति प्रनयाम[6]।
दृष्टि उलटि कै लगि रहो, निसु दिन आठो जाम ॥११॥
जेठ बिषम तप भजन को, केवल ब्रह्म बिचार।
कह भीखा सोइ धन्न है, जेकर नाम अधार ॥१२॥

हिँडोलना

हिँडोला माया ब्रह्म को सँग, नाम बोलता अंग ॥टेक॥
स्वारथ परमारथ दोऊ, गाड़ो खंभ बनाय।
निर्बिर्ति यहि परबिर्ति यहि बिधि, डोरि बाँधि बँधाय ॥१॥
झूलहिं संत असंत दोउ, अज्ञ तज्ञ[7] बिचार।
ये झूलहिं बिषया रत, वे नाम के हितकार ॥ २ ॥

---

(१) काटै। (२) पेड़। (३) पत्ती। (४) लाल। (५) कोमल। (६) प्राणायाम। (७) अज्ञान और ज्ञान।

ये झूलहिँ काम क्रोध सँग, मोर तोर अघाय ।
वे झूलहिँ जोग जुक्ति से, मन ज्ञान ध्यान लगाय ॥ ३ ॥
ये झूलहिँ सुत दारा सहित, मगन बारम्बार ।
वे झूलहिं सुद्ध सरूप सँग, दिन दिन रँग उजियार ॥ ४ ॥
ये झूलहिं जग जंजाल डूबे, फिकिरि उद्दम लाय ।
वे झूलहिँ द्वैत मिटाय यहि बिधि, छीर नीर बिलगाय॥५॥
ये झूलहिं प्रन औ पच्छ लिहे, जाति कुल ब्यौहार ।
वे झूलहिँ अबरन बरन तजि, सतगुरु चरन आधार॥६॥
ये झूलहिं कोट झराय खंदक, सराजाम सँवारि ।
वे झूलहिं इन्द्री करत निग्रह, सुरति निरति सँभारि ॥७॥
ये झूलहिँ सब हथियार हय गय[1], लाग बाग तुमार[2] ।
वे झूलहिँ प्रान अपान इक ह्वै, नाद के झनकार ॥ ८ ॥
ये झूलहिँ पूत सपूत के सँग, मान बड़ाई जोहि ।
वे झूलहिं आतम राम मिलि कै, छोट सब से होहि॥९॥
ये झूलहिँ पाप औ पुन्न फिरि फिरि, मरन धरि औतार ।
वे झूलहिं भीखा त्यागि तन को, आपु मिलि करतार॥१०॥

(२)

सतगुरु नावल सब्द हिंडोलवा, सुनतहिँ मन अनुरागल॥१॥
झूलत गुनत रुचित भावल, जियरा चकित उठि जागल॥२॥
करम भरम सब त्यागल, कपट कुचालि मन भागल ॥ ३ ॥
झूलत चेतन चित लागल, अनहद धुनि मन रातल ॥ ४ ॥
भीखा जो याहि मत मातल, पासा दाँव पायो तिन माँगल॥५

(१) घोड़ा हाथी। (२) तूमार, फैलाव ।

(३)

आदि मूल इक रुखवा[1] ता मैं तिनि[2] डार ।
ता बिच इक अस्थूल है साखा बहु बिस्तार ॥ १ ॥
अबरन बरन न आवही छाया अपरम्पार ।
माया मोह ब्यापक भयो झूले वार न पार ॥ २ ॥
सतगुरु नावल हिँडोलवा सुरति निरति गहि सार ।
झूलहिँ पाँच सोहागिनि गावहिँ मंगलचार ॥ ३ ॥
पौढ़्यो अगम हिँडोलवा सत्त सब्द निर्धार ।
झुलत झुलत सुख ऊपजै केवल ब्रह्म बिचार ॥ ४ ॥
अब की बार यह औसर मिलै न बारम्बार ।
फिर पाछे पछिताइबो देँह छुटे बेकार ॥ ५ ॥
जोग जुक्ति कै हिँडोलवा अनहद झनकार ।
जो यहि झुलहि हिँडोलवा ताहि मिलहि करतार ॥६॥
आवा गवन निवारहू फिरि न होय औतार ।
साधु सँगति को मेला झूलहिँ नाम अधार ॥ ७ ॥
डार पात फल पेड़ मैं देख्यो सकल अकार ।
भीखा दूसर गति भयो सुद्ध सरूप हमार ॥ ८ ॥

(४)

जोग जुक्ति कै हिँडोलवा गुरु सहज लखावल ॥ १ ॥
चाँदै राखि सूर पैाढ़ावल[3] पवन डोरि धै पावल ॥ २ ॥
अर्ध उर्ध मुख पावल पुलकि पुलकि[4] छबि भावल ॥ ३ ॥
गगन मगन गुन गावल सुरति निरति मैं समावल ॥ ४ ॥
भीखा यहि बिधि मन लावल आतम दरसावल ॥ ५ ॥

---

(१) पेड़ । (२) तीन । (३) बाईं स्वाँसा रोक कर दहिनी चलाई । (४) मगन होकर ।

बसंत

(१)

जब गुरु दयाल तब सत बसंत ।
यहि सिवाय मत है अनंत ॥ १ ॥
श्री पंचमी है पाँच नारि ।
सम गावहिं इक सुर धमारि ॥ २ ॥
धुनि अकास भरि रहलि छाय ।
सुनत मगन उर नहिँ समाय ॥ ३ ॥
धन्न भाग जा के यह सँजोग ।
मिल्यौ पदारथ अनँद भोग ॥ ४ ॥
जीव बसायो ब्रह्म अंस ।
बकुला तेँ भयो परमहंस ॥ ५ ॥
माघ मकर तन सुफल जानि ।
मिल्यौ पदारथ नाम खानि ॥ ६ ॥
नाद बिंद को जूह[1] होय ।
वे साहब ये सेवक जोय ॥ ७ ॥
सुन्न मँडल घर भयो भोर ।
सुद्ध सरूप चंद चित चकोर ॥ ८ ॥
भीखा मन मुक्ता चुगत आग ।
गुरु गुलाल जी के चरन लाग ॥ ९ ॥

(२)

खेलत बसंत रुचि अलखराय ।
रहनि निरंतर समय पाय ॥ १ ॥
नाम बीज फैलाव कीन्ह ।
जगत खेत भरि पवारि[2] दीन्ह ॥ २ ॥

---

(१) समूह। (२) पवारना, छींटना।

जाम्यौ आँक[1] अकार नेह ।
दिन दिन बढ़त करम सँदेह ॥ ३ ॥
पेड़ एक लगे तीन डार ।
ऊपर साखा बहु तुमार[2] ॥ ४ ॥
कली बैठि गुरु ज्ञान मूल ।
बिगसि बदन फूलो अजब फूल ॥ ५ ॥
फल प्रापत भयो रितु नसाय ।
परम जोति निज मन समाय ॥ ६ ॥
पक्क भयो रस अमी खानि ।
चाखत दृष्टि सरूप जानि ॥ ७ ॥
सोई आदि मध अंत सोइ ।
जीव पवन मन रह्यो न कोइ ॥ ८ ॥
सब्द ब्रह्म मन सुन्न लीन ।
भीखा राति न तहवाँ दीन[3] ॥ ९ ॥

(३)

चेतत बसंत मन चित चेतन्य ।
जोग जुगति गुरु ज्ञान धन्य ॥ १ ॥
उरध पधार्‌यो पवन घोर ।
दृष्टि पलान्यो[4] पुरुब ओर ॥ २ ॥
उलटि गयो थकि मिटलि दाह[5] ।
पच्छिम दिसि कै खुलति राह ॥ ३ ॥
सुन्न मँडल मैं बैठु जाय ।
उदित उजल छबि सहज पाय ॥ ४ ॥

(१) अंकुर । (२) तूमार, फैलाव । (३) दिन । (४) तैयार किया, कसा । (५) तपन ।

जोति जगामग झरत नूर ।
हूाँ निसु दिन नौबति बजत तूर ॥ ५ ॥
झलक झनक जिव एक होय ।
मन प्रान अपान को मिलन सोय ॥ ६ ॥
रूह अलख नभ फूल्यो फूल ।
सोइ केवल आतम राम मूल ॥ ७ ॥
देखत चकित अचर्ज आहि ।
जो वह सो यह कहौं काहि ॥ ८ ॥
भीखा निज पहिचान लीन्ह ।
वह साबिक[१] ब्रह्म सरूप चीन्ह ॥ ९ ॥

होली

(१)

होरी सो खेलै जा के सतगुरु ज्ञान बिचार ।
यहि सिवाइ जो और करतु है, ता को जन्म खुवार ॥१॥
इँगल पिंगल ह्वै सुन्न भँटानो, सुखमन भयो उँजियार ।
नूर जहूर बदन पर झलकत, बरखत अघर अधार ॥२॥
बाजत अनहद घंटा तहँ धुनि, अबिगत सब्द अपार ।
पुलकि पुलकि मन अनुभव गावत, पावत अलख दिदार ॥३॥
अजर अबीर कुमकुमा केसरि, उमगो प्रेम पोखार[२] ।
राम नाम रस रंग भयो, गत काम क्रोध हंकार ॥४॥
ब्यापक पूरन अगम अगोचर, निज साहब बिस्तार ।
भीखा बोलत एक सभन में, है जग सकल हमार ॥५॥

---

(१) प्राचीन । (२) हौज़ ।

(२)

जग नाम प्रकास अकार धरत जड़, आतम राम खेले होरी।
काम क्रोध मद लोभ ग्रासित नर, आपु तेँ आपु नरक बोरी॥१
तजि विषया रत भक्ति भाव जहँ, ज्ञान ध्यान रस रँग घोरी।
संत सभा चोआ अरु कुमकुम, प्रेम बचन छिरकत होरी॥२
सतगुरु हाथ बिकाय लियो, प्रभु दान दियो बंधन छोरी।
जोग जुक्ति अभ्यास भयौ, लै अर्ध उर्ध सुखमन झोरी॥३
सुरति निरति लव लीन भयो, सम्र जीव सीव[1] दोनो जोरी।
ब्रह्म सरूप अनूप दृष्टि भरि, निज प्रति देखि मिलो गोरी॥४
अगम अगोचर रूप झलाझलि, सोहं तार लगोरी।
कहैं भीखा मेरो ऐसो साहब, मन माया अँखुवा[2] तोरी॥५॥

(३)

ए हो होरी गाई, मधुर मधुर सुर राग चढ़ाई॥टेक॥

समय सोहावन देखत मानो,
गयो बसंत फाग रितु आई॥१॥
तन मन धन चरनन पर वारो,
नाम प्रताप गगन धुनि छाई॥२॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है,
सुरति निरति मिलि रास बनाई॥३॥
हौँ[3] तो सरनागत माँगत हौँ,
अब दीजै प्रभु संत दोहाई॥४॥
जल थल जीव जहाँ लगि देखौ,
मन को बोध नहीँ ठहराई॥५॥
काया गढ़ के गगन भवन में,
घुघुकि घुघुकि धुन नाम सुनाई॥६॥

(१) जिसकी सेवा करता है, स्वामी। (२) अंकुर। (३) मैं।

भीखा को मन भ्रमत देखि कै,
गुरु गुलाल जी पंथ चढ़ाई ॥ ७ ॥

(४)

इक पुरुष पुरान चहूँ जुग मेँ,
मिलि आतम राम खेलै होरी ।
रंग लगो फगुवा रस बसि,
भयो माया ब्रह्म दुनो जोरी ॥ १ ॥
जग परिपंच करम अरुझे नर,
सबै कहत मोरी मोरी ।
नाम पदारथ भूलि गयो,
गल फाँस परी भ्रम की डोरी ॥ २ ॥
कोउ जोग जुक्ति रस भेद पाइ कै,
सुरति निरति लै रँग बोरी ।
बाजत अनहद ताल पखावज,
उमग्यौ प्रेम अनन[1] खोरी[2] ॥ ३ ॥
सतगुरु सब्द अबीर कुमकुमा,
भाव भर्‌यौ झोरी झोरी ।
भीखा दिब्य द्रिष्टि करि छिरकत,
पलकन नूर चुवत ओरी[3] ॥ ४ ॥

(५)

मन मैं आनँद फाग उठो री ॥ टेक ॥
इँगला पिँगला तारी देवै, सुखमन गावत होरी ॥ १ ॥
बाजत अनहद डंक[4] तहाँ धुनि, गगन मैँ ताल परो री॥२॥

---

(१) एक ही का जिस मेँ दूसरे की गुंजाइश नहीँ है। (२) गली। (३) ओलती, पानी की धार जो छत से गिरती है। (४) डंका।

सतसंगति चोवा अबीर करि, दृष्टि रूप लै घोरी ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल जी रंग चढ़ायो, भीखा नूर भरो री ॥ ४ ॥

(६)

होरी खेलन जाइये, सत सुकरित साथ लगाई ।
यहि माया परपंच फागु मैं, मति कोइ परै भुलाई ॥१॥
सतगुरु ज्ञान अबीर रंग लै, हद भरि दमहिं चलाई।
पाँचपचीस सखी जहँचाचरि, गावहिंअनहद डंक बजाई॥२॥
सुनत मगनमनपवनलसितभयो,सुरति निरति अरुझाई।
इँगल पिँगल पिचुकारी छोड़हिं, सुखमन रंग भिँजाई॥३॥
ब्रह्म सरूप चेतन्न नीर लै, दुरमति मैल बहाई ।
भीखा ता छबि कहहि कौन मुख, एकौ जुक्ति न आई॥४॥

(७)

आनँद उठत झकोरी फगुवा, आनँद,उठत झकोरी ॥टेक॥
अनहद ताल पखावज बाजै, मनमत राग मरोरी ॥१॥
काया नगर मैं होरी खेल्यो, उलटि गयो तेहिं खोरी ॥२॥
नैनन नूर रंग उमग्यौ, चुवत रहत निज ओरी ॥३॥
गुरु गुलाल जी दाया कीन्हो, भीखा चरन लगो री ॥४॥

(८)

हरि नाम भजन हठ कीजै हो, स्वाँसा ढरकत रंग भरी।
हो होइ समय जात मानो गनि गनि, सिर पर
ठोकत काल घरी ॥ टेक ॥
फगुवा जग अकुवा खेलतु है, स्वारथ रत होरी परी।
परमातम चेतन्न आतमा, आइ सरूप गयो छरी[१] ॥१॥
कहत है बेद बेदांत संत को, साँच भक्ति बिनु भव तरी।
परमारथ गुरु ज्ञान अनादर, लोक लाज कुल को डरी ॥२॥

(१) छल जाना।

जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, तन पर आय चढ़ी जरी।
बात कफ पित कंठ गहो है, नैनन नीर लगो झरी ॥३॥
बिसर्यो गथ[1] अब सान बुझावत, जहँ जहँ बस्तु रही धरी।
हाहाकार करत घर पुर जन, थकित भयो का कहि करी ॥४
चतुर प्रबीन बैद कोउ आवो, हाथ उठा देखो नरी[2]।
भीखा बूझत कहत सबै अब, राम कृस्न बोलो हरी ॥५॥

(९)

जाके केवल नाम अधार होरी रंग भरी।
दुबिधा भाव पखंड तजो है सतगुर बचन अधार।
यहि बिधि सुद्धि करी ॥ १ ॥
तन मन वारि चरन पर दीन्हो पवन जोर बरियार।
जोग जुक्ति अवराध कठिन सुठि निपट खरग कै धार।
सनमुख लरी मरी ॥ २ ॥
सुन्न रैन बिच भोर भयो उठि चेतन करत बिचार।
प्रेम पदारथ प्रगट भयो जब ज्ञान अगिन धधकार।
देखत जरी बरी ॥ ३ ॥
आतम राम अखंडित पूरन ब्रह्म सरूप अकार।
भीखा भाग कहाँ लगि बरनौं जाहि मिले करतार।
धन्य सोई घरी ॥ ४ ॥

(१०)

धनि फाग खेलन सो जाय, निज पिया पाइ कै।
नाहीं तो बैठि तेवान[3] करै, वह रंग करम दुखदाय।
लावो न भुलाइ कै ॥ १ ॥
भरम भयंकर वार पार नहिं, कर मींजत पछिताय।
हर दम उठत मरोर हिये, जनु कहे कोउ पिय तुम आय।
धरो पगु धाइ कै ॥ २ ॥

---

(१) बोल। (२) नाड़ी। (३) फ़िकर।

यहि अंतर सुपना निसु वाली, सोइ आपु जनाय।
बूझत अरथ बिचार यहै सखि, आपा पति अपनाय।
मिलो मुसकाइ कै ॥ ३ ॥
सतगुर धन्य जो कह्यो अगुवने, सो अब कृपा जनाय।
भीखा अलख को लखो कहा, वहँ मन बुधि चित न समाय।
गावो का बजाइ कै ॥ ४ ॥

कबित्त

(१)

कोउ जजन[1] जपन कोउ तीरथ रटन[2],
ब्रत कोउ बन खंड कोउ दूध को अधार है।
कोउ धूम पानि[3] तप कोउ जल सैन लेवै,
कोउ मेघडम्बरो[4] सो लिये सिर भार है॥
कोउ बाँह को उठाय ढढ़ेसुरी कहाइ जाय,
कोउ तो मवन[5] कोउ नगन[6] बिचार है।
कोउ गुफाही मैं बास मन मोच्छही की आस,
सब भीखा सन्त सोई जाके नाम को अधार है॥

(२)

कोउ प्रानायाम जोग कोउ गुन गावै लोग,
कोउ मानसिक पूजा करे चित्त चेतना।
कोउ गीता भागवत कोउ रामायन मन,
कोउ होम यज्ञ करे बिधि बेद कहे जेतना॥
कोउ ग्रहन मैं दान कोउ गंगा अस्नान,
कोउ कासी ब्रह्मनाल[7] वे फलही के हेतना[8]।

---

(१) यज्ञ। (२) घूमना। (३) धुवाँ पीना अर्थात गाँजा पीना। (४) बड़ा छाता। (५) चुप। (६) नंगे। (७) काशी मैं एक अस्थान का नाम। (८) अभिप्राय से।

भीखा ब्रह्म-रूप निज आत्मा अनूप,
जो न खुल्यो दिव्य दृष्टि खालो कियो भ्रम एतना ॥
(३)
राम नाम जाने बिना वृथा है सकल काम,
जैसे नटिनी को नाट[१] पेखनी को पेखना[२] ।
गुरु जी से ज्ञान लेवे चरनौं मैं चित्त देवे,
मानुष की देही येही जीवन को लेखना ॥
ताखो[३] औ तिलक भाल सेल्ही औ तूमर[४] माल ।
मोर पच्छ पच्छ बाद सुद्ध रूप भेखना ।
भीखा दिव्य दृष्टि आपु जपत अजपा जाप,
आपुही को आपु सो तो आपुही मैं देखना ॥
(४)
पुरुष पुरान आदि दूसरो न माया बादि,
बोले सत्त सब्द जा मैं त्रिगुन पसार है ।
बीज बढ़ो है तुमार[५] चर अचर बिचार,
ता मैं मानुष सचेत औ चेतन अधिकार है ॥
सतगुरु मत पाय निज रूप ध्यान लाय,
जनम सुफल साँच ता को अवतार है ।
गगन गवन करै अनहद नाद भरै,
सुंदर सरूप भीखा नूर उँजियार है ॥
(५)
जा के ब्रह्म दृष्टि खुलो तन मन प्रान तुलो,
धन्य सोई संत जा के नाम की उपासना ।
ज्ञानिन मैं ज्ञान वोई अनुभव फल जोई,
तजै लोक लाज जा मैं काल जाल साँसना ॥

---

(१) चरित्र। (२) देखते भर का खेल है। (३) साधुवों की नोकदार टोपी। (४) तुम्बा। (५) बहुत। (६) आसन।

प्रेम पंथ पग दियो उरध में घर कियो,
मन निर्गुन पद छुटै जग बासना ।
जोग की जुगति पाय सुरति निरति लाय,
नाद बिंद सम भीखा लायो दृढ़ आसना[1] ॥

(६)

आदि अंत मध्य एक नाद बिंद सम पेख,
सब घट सुद्ध ब्रह्म दीखत ज्यौं अकास है ।
काहे को भरम करै जनमि जनमि मरै,
भजत न हठ करि जौ लौं तन साँस है ॥
निज सुख येही जानो दुबिधा न भाव आनो,
अलख अलेख देखो आपुही में बास है ।
चित्त ज्यौं चकोर लेवै चंद्रमा को दृष्टि देवै,
आत्मा प्रकासी ज्ञान भीखा निज पास है ॥

(७)

ज्ञान अनुमान करि चीन्ह ले अमान धरि,
गुरु परताप खुलो भरम कपाट है ।
चाँद सूर एक सम सुरति मिलाय दम,
इँगल पिँगल रँग सुखमन माट है ॥
पूरब पवन जोग पच्छिम की राह होय,
गंग जमुन संगम तहँ त्रिकुटी को घाट है ।
प्रान औ अपान असमान ही में थिर होवे,
भीखा सब्द ब्रह्म को अकास सुन्न हाट[2] है ॥

(८)

भूलो हाट ब्रह्म द्वार काम क्रोध अहंकार माहिं,
रहत अचेत नर मन माया पागो है ।

(१) आसन । (२) बाज़ार ।

अलख अलेख रूप आत्मा है भेख धरे,
कस न पुलकि[1] जीव ताहो पंथ लागो है ॥
अकथ अगाध वोई अनुभव फल जोई,
निसु महा भोर मानो सोय उठि जागो है ।
बाजै अनहद मारू उभै दल मोच्छ झारू,
सूरा खेत माँड़ि रहो भीखा कूर[2] भागो है ॥

(९)

कूर[2] है खजूर छाया संचै[3] बपु[4] झूठी माया,
ग्रसइ रहत यह जगत को हाल है ।
मन परतीत करै सत औ संतोष धरै,
नाम जपै हर दम दमहिँ को माल है ॥
साधन को संग जहाँ नाना परसंग तहाँ,
अर्थ नवीन सुनि जागो भाग भाल[5] है ।
धन्य आपु भेद पाय दीन्हो और को बताय,
भीखा गुरु जीव राम नाम तो गुलाल है ॥

(१०)

बालक सोँ भयो ज्वान दारा सुत ध्यान प्रान,
समय गये तेँ फल लागो भूख रूख है ।
करम धरम जप तीरथ रटत[6] तप,
राम नाम जाने बिना कन[7] तुख[8] खूख[9] है ॥
बिषै बिभव बिलास तूल बड़ा आस पास,
सत औ संतोष नाहिँ सबै सुख दुक्ख है ।
जगत समुद्र माहिँ नर तन नाव परी,
भीखा कनहरि[10] गुरु पार मुक्ख मुक्ख है ॥

---

(१) उमंग से । (२) कादर । (३) रक्षा करता है । (४) शरीर । (५) माथा ।
(६) घूमता है । (७) छाँटन । (८) भूसी । (९) छूछो । (१०) पतवार पकड़ने वाला ।

(११)

राम जो सों नेह नाहीं सदा अबिवेक माहीं,
मनुवाँ रहत नित करत गलगौज[1] है।
ज्ञान औ बैराग हीन जीवन सदा मलीन,
आत्मा प्रगट आपु जानि ले भानौज है॥
साहब सों कौल छूटी काम क्रोध लोभ लूटी,
जानि कै बँधायो मीठी बिषै माया फौज है।
साहब की मौज जहाँ भीखा कीन्ह मौज तहाँ,
साहब की मौज जोई सोई मौज मौज है॥

(१२)

खुद एक भुम्मि[2] आहि बासन[3] अनेक ताहि।
रचना बिचित्र रंग गढ़्यो कुम्हार है।
नाम एक सोन आस[4] गहना है द्वैत भास,
कहूँ खरा खोँट रूप हेमहिं[5] अधार है॥
फेन बुदबुद अरु लहरि तरंग बहु,
एक जल जानि लीजै मीठा कहूँ खार है।
आत्मा त्यौं एक जाते[6] भीखा कहै याहि मते,
ठग सरकार के बटोही[7] सरकार के॥

(१३)

एक नाम सुखदाई दूजो है मलिनताई,
जिव चाहहु भलाई तौ पै राम नाम जपना।
तात मात सुत बाम[8] लोग बाग धन धाम,
साँच नाहीं झूठ मानो रैनि कै सुपना॥
माया परपंच येहि करम कुटिल जेहि,
जनम मरन फल पाप पुन्न तपना।

(१) हल्ला। (२) मिट्टी। (३) बरतन। (४) अस। (५) सोना। (६) एक ही जाति की। (७) मुसाफ़िर। (८) स्त्री।

बोलता है आप ओई जेते औतार कोई,
भीखा सुद्ध रूप सोई देखु निज अपना ॥

(१४)

निरमल हरि को नाम सजीवन,
धन सो जन जिन के उर फरेऊ ।
जस निरधन धन पाइ संचतु है,
करि निग्रह क्रिरपिनि मति धरेऊ ॥
जल बिनु मीन फनी[1] मनि निरखत,
एकौ घरी पलक नहिं टरेऊ ।
भीखा गुंग औ गूड़ को लेखा,
पर कछु कहे बने ना परेऊ ॥

(१५)

गये चारि सनकादि पिता[2] लोक आदि धाम,
किये परनाम भाव भगति दृढ़ायऊ ।
पूँछ्यो हँसि प्रीति भाव माया ब्रह्म बिलगाव,
बिधि जग ब्यौहारी प्रति उत्तर न आयऊ ॥
किये बहुत समास भयो अरथ न भास,
हरि हरि सुमिरन ध्यान आरत सुनायऊ ।
प्रभु हंस तन लियो द्विज दरसन दियो,
भीखा अज[2] सनकादि कर जोरि माथ नायऊ ॥

रेख़ता

(१)

पाप औ पुन्न नर झुलत हिँडोलना,
ऊँच अरु नीच सब देह धारी ।

---

(१) साँप । (२) ब्रह्मा ।

पाँच अरु तीनि पच्चीस के बस परो,
   राम को नाम सहजै बिसारो ॥
महा कवलेस[1] दुख वार अरु पार नहिं,
   मारि जम दूत दें त्रास भारी ।
मन तोहिं धिरकार धिरकार है तोहिं,
   धृग बिना हरि भजन जीवत भिखारो ॥

(२)

करो बीचार निर्धार[2] अवराधिये[3],
   सहज समाधि मन लाव भाई ।
जब जक्त की आस तें होहु निरास,
   तब मोच्छ दरबार की खबरि पाई ॥
न तो भर्म अरु कर्म बिच भोग भटकन लग्यो,
   जरा अरु मरन तन बृथा जाई ॥
भीखा मानै नहीं कोटि उपदेस सठ,
   थक्यो बेदांत जुग चारि गाई ॥

(३)

भयो अचेत नर चित्त चिंता लग्यो,
   काम अरु क्रोध मद लोभ राते ।
सकल परपंच में खूब फाजिल हुआ,
   माया मद चाखि मन मगन माते ॥
बढ़्यो दीमाग मगरूर हय गज[4] चढ़ा,
   कह्यो नहिं फौज तूमार[5] जाते ।
भीखा यह ख़्वाब की लहरि जग जानिये,
   जागि करि देखु सब झूठ नाते ॥

---

(१) क्लेश, कष्ट। (२) निरंतर। (३) आराधना करो। (४) घोड़ा हाथी। (५) गिनती, बिस्तार।

(४)

झूँठ मैं साँच इक बोलता ब्रह्म है,
ताहि को भेद सतसंग पावे।
धन्य सो भाग जो सरन सेवा टहल,
रात दिन प्रीत लवलीन लावे॥
बचन लै जुक्ति सोँ सिद्धि आसन करै,
पवन सँग गवन करि गगन जावै।
प्रगट परभाव गुरु गम्य परचो इहै,
भीखा अनहद्द पहिले सुनावे॥

(५)

दूजे यह अमल दस्तूर दिन दिन बढ़्यो,
घटा अँधियार उँजियार भाया।
अर्ध से उर्ध भरि जाप अजपा जप्यो,
चाँद अरु सूर मिलि त्रिकुटि आया॥
झरत जहँ नूर जहूर असमान लौं,
रूह अफताब[1] गुरु कीन्ह दाया।
भीखा यह सत्त सो ध्यान परवान है,
सुन्न धुनि जोति परकास छाया॥

(६)

सब्द परकास के सुनत अरु देखते,
छूटि गइ बिषै बुधि बास काँची।
सुरति गै निरति घर रूप अयो[2] दृष्टि पर,
प्रेम की रेख परतीत खाँची॥
आतमा राम भरिपूर परगट रह्यो,
खुलि गई ग्रंथि[3] निज नाम बाँची।

(१) सूरज। (२) आयो। (३) गाँठ।

भीखा यौं पगि गयो जीव सोइ ब्रह्म मैं,
सीव अरु सक्ति को मिलन साँची ॥

(७)

सकल बेकार की खानि यह देँहि है,
मल दुर्गंध तेहि भरो माहीं ।
मन अरु पवन यह जोर दोनो बड़े,
इन को जीत कै पार जाहीं ॥
जाहि गुरु ज्ञान अनुमान अनुभव करै,
भयो आपु आप मिलि नाम पाहीं ।
भीखा आधार आपार अद्वैत है,
समुँद अरु बुंद कोइ और नाहीं ॥

(८)

जहाँ तक समुँद दरियाव जल कूप है,
लहरि अरु बुंद को एक पानी ।
एक सूबर्न[१] को भयो गहना बहुत,
देखु बीचार हेम खानी[२] ॥
पिरथवी आदि घट रच्यो रचना बहुत,
मिर्तिका[३] एक खुद भूमि जानी ।
भीखा इक आतमा रूप बहुतै भयो,
बोलता ब्रह्म चीन्है सो ज्ञानी ॥

(९)

ब्रह्म भरि पूर चहुँ ओर दसहूँ दिसा,
भाव आकासवत नाम गहना ।
अजर सो अमर आब्ररन अबिगति सदा,
आतमा राम निज रूप लहना ॥

---

(१) सोना । (२) सब की निकासी सोना से है । (३) मिट्टी ।

सत्त सौं एक अवलँब करु आपनो,
तजो बकवाद बहु फुहस[1] कहना ।
भीखा अलेख को देखि कै मिलि रहो,
मुष्टिका[2] बाँधि चुप लाइ रहना ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

अगह तुम्हरो न गहना है। अकह तुम कहा कहना है॥१॥
सब्द अरु ब्रह्म अधिकारी। चेतन तुम रूप तन धारी॥२॥
अबिगति तुम्हरी न गति पावै। कहाँ अस ज्ञान बुधि आवै॥३
तुम्हरो कहिं वार नहिं पारा। केतो अनुमान करि हारा॥४
अगम का गम कवन पावे। जहाँ नहिं चित्त मन जावे॥५
प्रगट तुम गुप्त सब माहीं। बियापक तुम कहाँ नाहीं॥६॥
सुनहु सब की कहहु सब से। देखहु सब को मिलो तन से॥७
जहाँ लगि सकल हौ तुमहीं। धोख यह बीच हम हमहीं॥८
छुटै जब तैं व मैं मेरा। तहाँ ठाकुर न कोउ चेरा॥९॥
केवल सोइ आपु आपै हो। दुइत सोइ जाय जापै हो॥१०॥
उभै[3] हम एक हौ तुमहीं। हमैं तुम्हैं भेद कम कमहीं॥११॥
भीखा तजो भरम के ताईं। चीन्हो निज आपनो साईं॥१२

॥ शब्द २ ॥

रखो मोहिं आपनी छाया। लगै नहिं रावरी माया॥१॥
कृपा अब कीजिये देवा। करौं तुम चरन की सेवा॥२॥
आसिक तुझ खोजता हारे। मिलहु मासूक आ प्यारे॥३॥
कहौं का भाग मैं अपना। देहु जब अजप का जपना॥४॥
अलख तुम्हरो न लख पाई। दया करि देहु बतलाई॥५॥

---

(१) झूँठी या फूहर बात। (२) मुट्ठी। (३) दो।

बारि बारि जावँ प्रभु तेरी । खबरि कछु लीजिये मेरी॥६॥
सरन मैं आय मैं गीरा । जानो तुम सकल पर[1] पीरा॥७॥
अंतरजामी सकल डेरो[2]। छिपो नहिं कछु करम मेरो॥८॥
अजब साहब तेरी इच्छा । करो कछु प्रेम की सिच्छा॥९॥
सकल घट एक ही आपै । दूसर जो कहै मुख कापै॥१०॥
निर्गुन तुम आप गुन धारी । अचर चर सकल नर नारी॥११
जानौं नहिं देव मैं दूजा । भीखा इक आतमा पूजा॥१२॥

॥ शब्द ३ ॥

भजन साईं का कर तू खूब, नहीं तो काल मारेगा ॥१॥
जुक्ति गुरु ज्ञान है आजूब, लखत दिल दौरि[3] हारेगा ॥२॥
तुझी मैं आपु है मुहबूब, सोई आप और तारेगा ॥३॥
अनाहद बाजता है झूम, सुनत मन पवन धारेगा ॥४॥
समाधी सहज लावो तुम, परम पद को सिधारेगा ॥५॥
काम अरु क्रोध करते धूम, बिना प्रभु को उबारेगा ॥६॥
रमिता रमो एकवहु भूमि, भीखा आतम बिचारेगा ॥७॥

॥ शब्द ४ ॥

जानो इक नाम को भाई, और का कौन लेखा है॥१॥
दृष्टि का भेद नहिं पाई, कहो केहि ताहि देखा है॥२॥
सुभग तन मानुखा जाई, भजो दिन जेइ सेषा है॥३॥
गुरू जब भेद बतलाई, सोई जन आपु पेखा है॥४॥
सब्द अरु ब्रह्म सुखदाई, सकल घट नाम लेखा है॥५॥
निर्गुन औ सगुन समताई, सोई जग रूप भेषा है॥६॥
अलख का लखन कठिनाई, करम को मार मेखा है॥७॥
कपट मन आस दुखदाई, लिखा भीखा जो रेखा है॥८॥

---

(१) पराई । (२) घट घट मैं ब्यापक । (३) दौड़ कर ।

॥ शब्द ५ ॥

सत्य गहै इक नाम को सोइ संत सयाने।
मन क्रम बचन बिचारि कै दूजो नहिं जाने ॥ १ ॥
जोग जुक्ति गुरु ज्ञान मैं जिन चित अरुझाने।
पाप अरु पुन्य करम कहा सुभ असुभ हिराने[1] ॥ २ ॥
अगम अगोचर रूप है फल आनि तुलाने।
प्रेम सुधा रस भावनो जन चाखि लुभाने ॥ ३ ॥
सब्द प्रकास सहज भयो चित चकित भुलाने।
भीखा सुनि तिन देखेऊ बिन आँखिहिं काने ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

काह भये गुरुमुख भये, दिल साँच न आया।
काम क्रोध के बसि परे, झूठी मन माया ॥ १ ॥
अपनी कपट कुचाल तें, नाना दुख पावै।
करम भरम डर बीच में सिंह स्यार कहावै ॥ २ ॥
अमृत तजि बिष खातु है, ताको का कीजै।
निज दाँतन रसना कटै, दोस कोहि दीजै ॥ ३ ॥
ज्ञान हीन औगति भयो, मरि नरकहिं जाई।
ता मैं चित चेतन करै, केहि कामै आई ॥ ४ ॥
लौंड़ी पूँछै पिया हौं, कहि भेद सुनाया।
सिर के साँटे[2] करार कियो, खोजि ताहि लै आया ॥५॥
साहब अलख अलेख है, गति लखहि न कोई।
भीखा निस्चै राम की, इच्छा से होई ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

सो हरि जन जो हरि गुन गैनो।
मन क्रम बचन तहाँ लै लावै, गुरु गोविंद को पैनो ॥१॥
ता पर होहिं दयाल महा प्रभु, जुक्ति बतावैं सैनो ॥२॥

---

(१) खो गये। (२) बदले।

बूझि बिचारि समझि ठहरावत, तुरत भयो चित चैनो ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ पखेरू, टूटि जात तब डैनो[1] ॥४॥
आतम राम अभ्यास लखन करि, जब लेवे निज ऐनो[2] ॥५॥
ब्रह्म सरूप अनूप की सोभा, नहिँ कहि आवत बैनो[3] ।
भीखा गुरु गुलाल सिर ऊपर, देखत है बिनु नैनो ॥६॥

॥ शब्द ८ ॥

देखो प्रभु मन कर अजगूता[4] ॥ टेक ॥
राम को नाम सुधा सम छोड़त बिषया रस लै सूता ॥१॥
जैसे प्रीति किसान खेत सोँ दारा धन औ पूता ॥२॥
ऐसी गति जो प्रभु पद लावै सोई परम अवधूता ॥३॥
सोई जोग जोगेसुर कहिये जा हिये हरि हरि हूता[5] ॥४॥
भीखा नीच ऊँच पद चाहत मिलै कवन करतूता ॥५॥

॥ शब्द ९ ॥

मन मोर बड़ अवरेबिया[6] ।
हरि भजि सुख नहिँ लेत, मन मोर बड़ अवरेबिया॥ टेक॥
दिव्य दृष्टि नहिँ रूप निरेखत, नूर देत बहु जेबिया[7] ॥१॥
सतगुरु खेत जोति लै बोवल, भीखा जम लियो हिसबिया ॥२॥

॥ शब्द १० ॥

राम नाम भजि लीजै भाई ॥ टेक ॥
देखु बिचारि दूसर कोउ नाहीँ,
हितु अपनो हरि कोजै जाई ।
जग परपंच सकल भ्रम जानो,
नाम रंग भीँजै सुखदाई ॥ १ ॥
संतन हाट बिकाय बस्तु सो,
नाम अमोल लीजै अनकाई[8] ।

---

(१) पर। (२) दर्पन। (३) कहने मेँ। (४) अचरज खेल। (५) होता या उठता है। (६) फ़रेबी। (७) ज़ेब, शोभा। (८) आँक या जाँच कर।

सो धन धन्य उदार तियागी,
खरचत नहिँ छोजै अधिकाई ॥ २ ॥
तजि कर्म सकल भजु दृढ़ मत धरि,
मरिये भा जीजै[1] मन लाई ।
अगम पंथ को चलना है मन,
छाँड़ि दीजै अलसाई ॥ ३ ॥
जहँ लग तहँ लग एक ब्रह्म है,
का सोँ सीखोजै[2] अतमाई[3] ।
खोजत खोजत हारि गयो सब,
थाके सकल किनहुँ नहिँ पाई ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ तजो तुम,
हरि हर दम लीजै गाई ।
जन भीखा वै धन्य साधु जो,
नाम अमल पीवैँ छकियाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

तू ज्ञानी जना देखहु आपै आपु बना ॥ १ ॥
आपु बिना आपन नहिँ कोई समझहु बूझि बिचारि तना ॥२॥
अगम अगोचर बसत निरंतर साहब एक अनंत घना ॥३॥
मन क्रम बचन जो हरि रँग राते सो अब करैँ कर्म कवना ॥४॥
(भीखा) ब्रह्म सरूप प्रगट पर अनहद[4] बड़ा तासु मिलना ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

करि करम हरिहिँ पर वारो, फल सानो[5] ना ॥ १ ॥
प्रभु मिलन हेतु प्रगटानो, केहु मानो ना ॥ २ ॥
सब साहब आपुइ अपनो, केहु जानो ना ॥ ३ ॥
प्रभु अनहद धुनि घहरानो, केहु कानो[6] ना ॥ ४ ॥

(१) चाहे मरै चाहे जियै । (२) सीखिये । (३) आत्म ज्ञान । (४) कठिन । (५) मिलाओ । (६) सुनो ।

प्रभु प्रेम भक्ति को बानो, केहु ध्यानो ना ॥ ५ ॥
प्रभु व्यापक पुरुष पुरानो, केहु ज्ञानो ना ॥ ६ ॥
मन भीखा भर्म भुलानो, पहिचानो ना ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

तुम जानहु आतम रामा अपनो हित कै ॥ टेक ॥
ज्ञान ध्यान बैराग सुदृढ़ तेहिं प्रेम भक्ति सुख धामा,
गायो गित[1] कै ॥ १ ॥
सुमिरन भजन बिचार मैं रत तेहिं, क्रोध होय गत कामा,
इन्द्री जित कै ॥ २ ॥
हरि सौं प्रीति निरंतर जाको, निस दिन आठो जामा,
भजनो नृत कै ॥ ३ ॥
पाप औ पुन्न अधर्म धर्म किये, ऊँच नीच तन खामा,
जन्मै तित कै ॥ ४ ॥
भीखा मन निग्रह[2] नहिँ तब लौं, जिव न लहै बिस्रामा,
चिंता चित कै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मन अनुरागल हो सखिया ॥ टेक ॥
नाहीं संगत औ सौ ठकठक, अलख कौन बिधि लखिया१
जन्म मरन अति कष्ट करम कहँ, बहुत कहाँ लगि भँखिया२
बिनु हरि भजन को भेष लिये, कहा दिये तिलक
सिर तखिया[3] ॥३॥
आतम राम सरूप जाने बिन, होहु दूध कै मखिया ॥४॥
सतगुरु सब्दहिं साँचि गहो, तजि झूठ कपट मुख भखिया॥
बिन मिलले सुनले देखले बिन, हिया करत सुर्ति अँखिया॥६
कृपा कटाच्छ करो जेहिँ छिनभरि कोर तनिक इक अँखिया॥७

---

(१) गीत। (२) शांत। (३) साधुओं की टोपी।

धन धन सो दिन पहर घरी पल, जब नाम सुधा रस चखिया ॥८
काल कराल जँजाल डरहिंगे, अबिनासी को धकिया[१] ॥९॥
जनभीखा पिया आपु भइल, उड़िगैलि भरम को रखिया[२] ॥१०

॥ शब्द १५ ॥

ना जानौं प्रभु का धौं रंग रचो री ॥ टेक ॥
ज्यौं कुम्हार का चाक फिरावत यहि जग खंभ लगो री॥१॥
जोई जोई रँग खानि खानि को सोइ सोइ सब्द करो री ॥२॥
यहि तन खेल तिकठिया लागो गोटी खूँटि[३] धरो री॥३॥
काम क्रोध दुनो लगे दुकठिया तिकठा खेल उठो री॥४॥
यह भीखा मोहिं सरन राखिये माँगत हौं कर जोरी॥५॥
अबकी बार दुकठिया छूटे तुम लायक यहि थोरी[४] ॥६॥

॥ शब्द १६ ॥

सब्द कै उठल मनोरवा[५] हो, अनहद धुनि घहराई ॥१॥
सुनत सुनत चित लागल हो, दिन दिन रुचि अधिकाई॥२॥
मन अनुमान मनोरवा हो, सुरति निरति अरुझाई॥३॥
सब्द प्रकास मनोरवा हो, दिब्य दृष्टि दरसाई ॥४॥
सुद्ध सरूप मनोरवा हो, सतगुरु दिहल लखाई ॥५॥
भीखा हंस मनोरवा हो, छीर नीर बिलगाई ॥६॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सब्द ऊठन लगो, अनुभौ कछु बरनि न जाई ॥१॥
आनँद अगम उमँग भयो, ता पद जिव लागो लव लाई॥२॥
सुनत सुनत तन तपन गई, छुटि गइ जग करम बलाई॥३॥
नाद बिंद को जूह भयो, मनुवाँ तहँ रहल लुभाई॥४॥
पिरथी गगन इक सम भयो, आपै वहि त्रिभुवनराई॥५॥
दूसर दृष्टि न आवई, सोइ भीखा चरन समाई॥६॥

(१) धाक, प्रताप। (२) राख। (३) किनारे। (४) तुम्हारे लिये यह ज़रा सी बात है। (५) एक राग का नाम।

॥ शब्द १८ ॥

राम नाम भजि ले मन भाई ।
काहे कै रोस[1] करहु घरही मेँ, एकै तुम हमरे पितु माई॥१
देखहु सुमति संग कै भायप[2], छिमा सील सँतोष समाई।
एकै रहनि गहनि एकै मति, ज्ञान बिबेक बिचार सदाई॥२
होहु परम पद के अधिकारो, संत सभा महँ बहुत बड़ाई ।
कुमति प्रपंच कुचाल सकल यह, तुम्हरी देखि बहुत मुसकाई॥३
अब तुम भजहु सहाय समेतो, पाँच पचीस तीन समुदाई[3] ।
तुम अनादि सुत बड़े प्रतापी, छोट कर्म करि होहि हँसाई॥४
तुम मोहिँ कीन्ह हाल को गोदो[4], इत उत यहँ भरमाई ।
तेहिँ दुख सुख को अंत कहै को, तन धरि धरि
मोहिँ बहुत नचाई ॥५॥
अब अपनी उनमेख[5] तजन की, सपथ[6] करो दृढ़ मोहिँ
सोहाई ।
जन भीखा के कहा मानु अब, मन तोहिँ राम कै लाख दोहाई॥६

॥ शब्द १९ ॥

जोग जुक्ति गुरु लगन लगाई ।
साजि बरात बियाहन जाई ॥ १ ॥
उर्ध पवन मन धुजा बिराजै ।
सुतरी[7] अरपी[8] अनहद बाजै ॥ २ ॥
नरसिंघा[9] तुरही[9] सहनाई ।
घंटा धुनि अंबर[10] पर छाई ॥ ३ ॥
पालकी सुरति निरति लौ लीना ।
लागे पाँच कहार प्रबीना ॥ ४ ॥

---

(१) क्रोध, लड़ाई । (२) भैयादी, भाई बंदी । (३) इकट्ठा करके । (४) बच्चा । (५) अभिमान । (६) क़सम । (७) ऊँट पर का डंका । (८) घोड़े पर का डंका । (९) बाजों के नाम । (१०) आकाश ।

अठकठ[1] साज बरनि नहिं जाई ।
संगी सो इक एक सोहाई ॥ ५ ॥
अचरज एक जु देखा भली ।
दुलहिन खोजन पिय को चली ॥ ६ ॥
सुन्न सिखर पर माँडो छायो ।
इँगला पिँगला चैाक पुरायो ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति कै साज सजाई ।
कुंभक पूरक कलस भराई ॥ ८ ॥
गावहिँ पाँच पचीसो गुनी ।
सुनत मगन ह्वैं साधू मुनी ॥ ९ ॥
सँदुर उदित जोति जगमगे ।
आपन नाह[2] आपु से पगे[3] ॥ १० ॥
दुलहिन नाम सेव करि पाई ।
नाद बिंद बहुतै भैाजाई ॥ ११ ॥
भीखा मगन रहे हर हाल ।
तजि परपंच जगत को ख्याल ॥ १२ ॥

॥ शब्द २० ॥

हो पतित-पावन नाम हिम्मत न टुरे ।
जैसे किरन सूर सम पुरे ॥ टेक ॥

जैसे प्रीति प्रान अरु देही । तैसे हरि जन परम सनेही ॥१॥
जैसे प्रीति जल अरु मीना । तैसे सुरति निरति लौ लीना ॥२॥
जैसे पदुम[4] नाल बिच तागा । तैसे जीव ब्रह्म इक लागा ॥३॥
जैसे कीट भृंग रँग जागा । तैसे आतम सौं मन पागा ॥४॥
जैसे भीखा फनि[5] मनि लाय । तैसे दृष्टि सरूप समाय ॥५॥

---

(१) आठ काठ का । (२) पति । (३) मिल गये । (४) कँवल । (५) साँप ।

॥ शब्द २१ ॥

निज आतम भजि लेहु तने, जैसे घरे तैसे बने ॥टेक॥

ज्ञान रत काम तज क्रोध थिर मने।
और बिषै तज निज रूप जने[1] ॥ १ ॥

गुरु गम जोग करै युक्ति सधने।
आपा आपु ही में उक्ति सयने ॥ २ ॥

आदि अंत मध एक व्यापक सघने।
माया परपंच झूठ जक्त सपने ॥ ३ ॥

दीन के दयाल जन आरत समने।
केवल भक्ति माँगे भीखा छिन छिने ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

जान दे करौं मनुहरिया[2] हो ॥ टेक ॥

अनेक जतन करिके समझाओं,
मानत नाहिं गँवरिया हो ॥ १ ॥

करत करेरी नैन बैन सँग,
कैसे के उतरब दरिया हो ॥ २ ॥

या मन तेँ सुर नर मुनि थाके,
नर बपुरा कित धरिया हो ॥ ३ ॥

पार भइलौं पिव पीव पुकारत,
कहत गुलाल भिखरिया हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

तू है जोगी जना ब्रह्म रूप लख जिव अपना ॥१॥
मैं नाहीं निज साहब आपै कछु इक फेर पर्यो इतना॥२॥
जोग जज्ञ तप दान नेम ब्रत सोवत साँच जगे सुपना॥३॥
सुख दुख भोग भोगता है जितने तितने पाप पुन्न तपना॥४॥
सतगुरु कह्यो बिचारि भेद मुख भीखा अजपा जप जपना॥५॥

(१) जाने। (२) चिरौरी, खुशामद।

॥ शब्द २४ ॥

इक दिन मन देखल बौराइल ।
सास्तर अंग[1] सरूप लजाइल ॥ १ ॥
मेरी ओर न जोरत नैना ।
साबिक बचन बोलता बैना ॥ २ ॥
दसा उन्मत मतवाला जैसे ।
डगमग चित पग परता तैसे ॥ ३ ॥
चंचल चकित चहूँ दिस जावै ।
इत उत छिन छिन पल पल धावै ॥ ४ ॥
बिषया लंपट करत अधीना ।
तृस्नावंती सदा मलीना ॥ ५ ॥
जो कतहूँ हरि चरचा सुनै ।
तजि माया परपंचहिं गुनै ॥ ६ ॥
काम क्रोध मद गर्ब भुलाई ।
लहवत[2] बुद्धि करत लरिकाई ॥ ७ ॥
सो तो भली बेर नहिं पावै ।
जो नहिं राम चरन चित लावै ॥ ८ ॥
थाको बेद बेदांत सिखाई ।
भीखा के मन लाज न आई ॥ ९ ॥

॥ शब्द २५ ॥

नैन सेज निज पिय पौढ़ाई, सो सुख मौजै दिलहिं जनाई॥१
बोलता ब्रह्म आतमा एकै, भाव मिलन को सकै दुराई[3]॥२
अगम अगोचर अधर अकथ प्रभु, ता सँ कहौं
कौन मुँह लाई॥३॥

---

(१) छः अंग कर के अर्थात सर्बांग। (२) लाख सरीखी समझ जो गर्मी पा कर टिघल जाय और फिर कड़ी की कड़ी हो जाय। (३) छिपाना।

अंग अंग पर कोटि कोटि छबि, कहत सो भेद बेद सकुचाई ॥४
ईसुर की यह प्रगट इसुरता, भीखा ब्यापक रूप अघाई ॥५

॥ शब्द २६ ॥

हे मन आतमा सौं रति करन, ता तें और सकल परिहरन ॥१
परमातम चेतन्य रूख[1] तन, रूप सुपकु[2] फल फरन।
दृष्टि बिहंग सुरति लेइ जावै, खात सुखद[3] दुख हरन ॥२॥
आवत जात केतिक जुग यहि मग, समुझि कबहुं नाहिं परन।
भीखा दरद पराय[4] जाहि पर, कोर तनिक इक ढरन ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

हमरो मनुवाँ बड़ो अनारी।
साहब निकट न करत चिन्हारो ॥ १ ॥
प्रानायाम न जुक्ति बिचारी।
अजपा जाप न लावै तारी ॥ २ ॥
खोलै न भ्रम तें बज्र किवारी।
निज सरूप नहिं देखि मुरारी ॥ ३ ॥
प्रान अपान मिलन न सँवारी।
गगन गवन नहिं सब्द उचारी ॥ ४ ॥
सुन्न समाधि न चेत बिसारी।
यह लालसा[5] उर बड़ी हमारी ॥ ५ ॥
सर्व दान गुरु दाता भारी।
जाचक सिष्य सो लेत भिखारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द २८ ॥

सब भूला किधौं हमहिं भुलाने।
सो न भुला जा के आतम ध्याने ॥ १ ॥

---

(१) पेड़। (२) अच्छा पका हुआ। (३) सुखदाई। (४) भाग जाय। (५) हौसला।

सब घट ब्रह्म बोलता आही ।
दुनिया नाम कहैँ मैं काही ॥ २ ॥
दुनिया लोक बेद मति थापे ।
हमरे गुरु गम अजपा जापे ॥ ३ ॥
हरि जन जे हरि रूप समावे ।
घमासान[1] भये सूर कहावे ॥ ४ ॥
कहे भीखा क्यौं नाहींनाहीं[2] ।
जब लगि साँच झूठ तन माहीं ॥ ५ ॥

॥ शब्द २६ ॥

रे मन ह्वै है कवन गति मेरी ।
मेरी समझ बूझ होत देरी ॥ टेक ॥
यह संसार आये गति माया लागी धाये ।
राम नाम नहिं जान्यो मति गति न निबेरी॥१॥
भजन करारे[3] आये कबहीं न साँचि गाये ।
करम कुटिल करे मति गइ तेरी ॥ २ ॥
भीखा चरनौं मैं लीजै मन माया दूरि कीजै ।
बार बार माँगै इहै प्रीत लागै तेरी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३० ॥

अधम मन राम नाम पद गहो ।
तातेँ यह तन धरि निरबहो[4] ॥ टेक ॥
अलख न लखि जाय अजपा न जपि जाय ।
अनहद के हद नाहीं हो ॥ १ ॥
कथनी अकथ कवनि बिधि होवे ।
जहँ नाहीं तहँ ताही हो ॥ २ ॥

(१) युद्ध । (२) नेत नेत । (३) इक़रार । (४) निर्वाह हो ।

बिन मूल पेड़ फल रूप सोई ।
निज दृष्टि बिन देखी कहो ॥ ३ ॥
बिन अकार को रूह नूर है ।
अगिनि बिन भ्रम मैं दहो ॥ ४ ॥
बोलता है आपु माहीं आतमा है हम नाहीं ।
अविगति की गति महो[1] ॥ ५ ॥
पूरन ब्रह्म सकल घट ब्यापक ।
आदि अंत भरिपूर रहो ॥ ६ ॥
सतगुरु सत दियो सुरति निरति लियो ।
जीव मिलि पिय पहुँच हो ॥ ७ ॥
जब भीखा अब कारन छोड़ो ।
तत्त पदारथ हाथ लहो ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

उठ्यो दिल अनुमान हरि ध्यान ॥ टेक ॥
भर्म करि भूल्यो आपु अपान ।
अब चीन्हो निज पति भगवान ॥ १ ॥
मन बच क्रम दृढ़ मत परवान ।
वारो प्रभु पर तन मन प्रान ॥ २ ॥
सब्द प्रकास दियो गुरु दान ।
देखत सुनत नैन बिनु कान ॥ ३ ॥
जा को सुख सोइ जानत जान ।
हरि रस मधुर कियो जिन पान ॥ ४ ॥
निर्गुन ब्रह्म रूप निर्बान ।
भीखा जल ओला गलतान[2] ॥ ५ ॥

(१) महा, बड़ी। (२) लीन।

॥ शब्द ३२ ॥

क्रियो करार भजन करतार ॥ टेक ॥

जनमत मरत अनेक प्रकार,
त्रसित[1] कउल पुनि बारंबार ॥ १ ॥
अबकी बार पायो छुटकार,
सुमिरन ध्यान धरो निरधार ॥ २ ॥
पायो सुभग मनुष अवतार,
पवन लगे भ्रमि भुलेउ बिचार ॥ ३ ॥
सुत दारा धन धाम पियार,
नफा कहाँ तैं मूल बिगार ॥ ४ ॥
जब गुरु खोलहिँ बज्र किवार,
भीखा सो पहुँचे दरबार ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

थाम्है मूल पवन को धीरा, जो नेकु गहै दिल धीरा॥१॥
दूजे अप तीजे तेज अपरबल, चौथे बायु तन पीरा ॥२॥
पँचयेँ अकास छठे तम छोड़ो, सतयेँ होइ मन थीरा॥३॥
अपरम्पार बस्तु की जागह, भीखा बोध फकीरा ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन चाहत दृष्टि निहारी ।
सुरति निरति अंतर लै जावो निज सरूप अनुहारी ॥१॥
जोग जुक्ति मिलि परखन लागो पूरन ब्रह्म बिचारी ।
पुलकि पुलकि आपा महँ चीन्हत देखत छबि उँजियारी॥२॥
सुखमन के घर आसन माँड़ो इँगल पिंगलहिँ सुढारी ।
सुन्न निरंतर साहब आपे सब घट सब तेँ न्यारी ॥ ३॥

---

(१) डरा हुआ ।

प्रेम प्रीति तन मन धन अरपो प्रभुजी की बलिहारी।
गुरु गुलाल के चरन कमल रज लावत माथ भिखारी॥४॥

॥ शब्द ३५॥

जन मन मनहीं में धुनि लाई ॥ टेक ॥
गुरु प्रताप साधु की संगति, नाम पदारथ सुनि पाई॥१॥
सुनत सुनत मन मगन भयो है, फागु सुहावन घर आई॥२॥
तन मन प्रान ताहि पर वारो, रहो चरन में लपटाई॥३॥
भीखा अब के दाँव तुम्हारो, मन चित दै हरिहौं गाई॥४॥

॥ शब्द ३६ ॥

करै पाप पुन्न की लदनी, जग ख्याल हो जग ख्याल हो॥१॥
लागो हासिल कर्म हैवान,
टूटो परत नहीं कछु फाजिल, जन्मत मरत निदान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ २ ॥
त्यागि भजै हरि नामहीं, हिये प्रीति मन आन।
जोग जुक्ति मन लावे मेरवै[1] प्रान अपान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ३ ॥
गगन गवन करि जातो तेहिं बिच परल उद्यान[2],
सुधि बुधि सबही हरि लियो करब कवन बिधि ध्यान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ४ ॥
नाद अनाहद बाजल उह सबद सुनो बिनु कान,
पुलकि भयो जिय ताहि छिन उदै भयो ब्रह्मज्ञान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ५ ॥
आतम राम निरामय अलख पुरुष निरबान,
भीखा ता छबि देखत सो केहि मुख करौं बयान।
जग ख्याल हो जग ख्याल हो ॥ ६ ॥

---

(१) मिलावै। (२) स्वाँस का नाम।

॥ शब्द ३७ ॥

साधो भाई सब महँ निज पहिचानो ।
जग पूरन चारिउ खानी ॥ टेक ॥

अविगति अलख अखंड अनमूरति, कोउ देखे गुरु ज्ञानी॥१
ता पर जाइ कोऊ कोउ पहुँचे, जोग जुक्ति करि ध्यानी॥२॥
भीखा धन्य हो हरि सँग राते, सोई हैँ साधु परानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

राम से करु प्रीति अब के राम से करु प्रीति, हे मन ॥ १ ॥
राम बिना कोउ काम न आवै, अंत ढहेगी भीत, यह तन ॥२॥
बूझि बिचारि देखु जिय अपने, हरि बिन नहिँ कोउ हीत,
यह बन ॥ ३ ॥
गुरु गुलाल के चरन कमल रज, धरु भीखा उर चीत,
यह धन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३९ ॥

संतो चरन कमल मन बसले हो ।
ताते जन सरनागति रस ले हो ॥ टेक ॥

गुरु प्रताप साध की संगति जोग जुक्ति उर लसले हो॥१॥
भीखा हरि पद चहै समाने सब्द सरोवर धसले हो॥२॥

॥ शब्द ४० ॥

जोग जुक्ति परखन लगो, समुझत वार न पार ॥ १ ॥
नेकु दृष्टि नहिँ आवई, जिउ पर परल खँभार ॥ २ ॥
उबि उबि घुमि घुमि उलटि गयो मन, सुनि धुनि चढ़ल पहार३
सुन्न सिखर पर जाइ रह्यो है, खुलि सब भरम किवार॥४॥
बासर पूरन[1] चंद उगो है, अचरज निज रूप हमार॥५॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ लगो है, भीखा गुरु चरन अधार॥६॥

(१) पूरनमासी का दिन ।

॥ शब्द ४१ ॥

मन करिले नाम भजन दम दम ॥ टेक ॥
जुग बरस मास दिन पहर घरी छिन, छीजै करो
किरति जम जम ॥ १ ॥
आतम राम प्रगट निज ता को, तन मन अर्पन कीजै,
व्यापक सम सम ॥ २ ॥
सतगुरु कह्यो सुझाय जवनि बिधि, दृष्टि रूप जल भींजै,
मिलन गम गम ॥ ३ ॥
होइ एकांत सुतंत्र बैठि कै, अनहद धुनि सुनि लीजै,
बाजत झम झम ॥ ४ ॥
भीखा धन्य जो त्यागि जक्त सुख, हरि को रस मद पीवै,
अस जन कम कम ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

आसिक तूँ यारे, खोजो मासूक हरि प्यारे ॥टेक॥
आसिक यारे सब सौं न्यारे, निकटहिं अपरंपारे॥१॥
आसिक यारे बहुत पुकारे, हे पिय पिय पपिहा रे ।
आसिक यारे स्वाँति अधारे, चात्रिक तन मन वारे ॥२॥
आसिक यारे काज सँवारे, मिलो प्रभु प्रान हमारे ।
भीखा यारे एक बिचारे, भ्रम कपटहिं परच[1] उघारे॥३॥

॥ शब्द ४३ ॥

मोहिं कहो आपनो सेवक ॥ टेक ॥
हिय जिय नैन स्रवन नासा सिर, अछय पुरुष तुम देवक॥१॥
जेहि चाहो भव तें काढ़न हौ, कनहरिया[2] गुरु खेवक॥२॥
भूखो नैन रूप को चाहत, मिलनि सकल रस मेवक[3]॥३॥
भीखा अपरंपार तुमहिं अस, कौन भजन करि लेवक॥४॥

---

(१) तह, गिलाफ़ । (२) पतवार पकड़ने वाला । (३) मेवा ।

ककहरा

(१)

भजि लेहु सुरति लगाय, ककहरा नाम का ॥ टेक ॥
क–काया मेँ करत कलोल, रैनि दिनि सोहं बोलै।
ख–खोजै जो चित लाय, भरम को अंतर खोलै ॥१॥
ग–ग्यान गुरू दाया कियो, दियो महा परसाद।
घ–घुँमड़ि घहरात गगन मेँ, घटा अनाहद नाद ॥२॥
न–नैन सोँ देखो उलटि कै, ठाकुर को दरबारी।
च–चमतकार वह नूर, पूर संतन हितकारी ॥ ३ ॥
छ–छिन माँ भनि तिन[1] कर्म गयो है, जीव ब्रह्म के पास।
ज–जैजै सब्द होत तिहुँ पुर मेँ, सुद्ध सरूप अकास ॥४॥
झ–झकोरि झपाक झपटि, नर समय गँवाई।
न–नहिँ समुझत निज मूल, अंध ह्वै दृष्टि छिपाई ॥५॥
ट–टँट[2] संकट मेँ ग्रसित है, सुत दारा रहसाई[3]।
ठ–ठठाय मुसकाय हँसतु है, मनहुँ परल निधि[4] पाई ॥६॥
ड–डाँवाँडोल का फिरहु, नेकु तुम समुझहु भाई।
ढ–ढरके जबही[5] बुंद बपू[6] की, खबरि न पाई ॥७॥
न–नमो नमो चरनन नमो, धरो नाम कै ओट।
त–तंत[7] माल सब राखि लीजिये, कबहुँ परत नहिँ टोट ॥८
थ–थकित भयो थहराय, ज्ञान जब हिरदे आया।
द–दरकि[8] हिये बहु जीव, ब्रह्म मेँ आनि समाया ॥९॥
ध–धक्का सब को सहै, जपै सो अजपा जाप।
न–निबहि जाय सो संत कहावे, जाके भक्ति प्रताप ॥१०॥

---

(१) तीन। (२) झगड़ा। (३) बिलास करता है। (४) पड़ा हुआ धन। (५) जब जीव निकल गया। (६) शरीर। (७) तत्व। (८) धड़क कर।

प-परमेसुर प्रगट, आपु मैं आपु छिपाय।
फ-फाजिल जो होय, सोइ यह मतिहिं समाय ॥११॥
ब-बाये बस्ती नगर, तजै एक ही बार।
भ-भय भव भटका भरम निवारै, केवल सत्त अधार ॥१२॥
म-माया परपंच, पाँच मैं भरमत रहई।
य-यन्मत[१] अरु मरत, देँह को अंत न लहई ॥१३॥
र-रमता घट घट बसै, तेहिं काहे नहिं जान।
ल-लै लाय जो ताहि पुरुष सौं, पावै पद निर्बान ॥१४॥
व-वावागवन[२] न होय, पुरुष पुरुसोतम जाने।
श-समुझै कोउ संत, सोई यह भेद समाने ॥१५॥
ष-षड्‌ ज्ञान अमान लियो है, कियो बिचार को धार।
स-संसय काठ कठंगरा, ता सोँ काटत लगे न बार ॥१६॥
ह-हक्क हलालहिं सिदिक,[३] समुझि हराम न खावै।
छ-छिमा सील संतोष, सहज मैं जो कछु आवै ॥१७॥
अ इ ए उ[४] गुरु गुलाल जी, दियो दान समुदाय।
जाचक भीख भीखानँद पायो, आतम लियो दरसाय ॥१८॥

अलिफ़नामा

बिनु हरि कृपा न होय ककहरा ज्ञान का ॥टेक॥
अलिफ-अलाह अभेद सुरति जद मुर्सिद देवे।
बे-बहकै नहिं दूर निकटहीं दरसन लेवे ॥ १ ॥
ते-ते ब्यापक सकल है जल थल बन गृह छाइ।
से-से आप मासूक बनो है कोउ आसिक दरसाइ ॥२॥

---

(१) जन्मत। (२) आवागवन। (३) जाइज़। (४) आयो।

जीम–जब्रून है जहर जक्त को भोग सुझा री ।
हे–हक्क न समुझत नान करम सों करत खुवारी ॥ ३ ॥
खे–खिन खिन मन रहत है माया के परपंच ।
दाल–दंभ निग्रह नहीं[१] कस पावे सुख संच ॥ ४ ॥
जाल–जाल फाँस नर फँस्यो आपु तें आपु बझाये ।
रे–ररंकार निरधार जन हीं सहज छुटाये ॥ ५ ॥
जे–जहूर वह नूर देखि जिय आनन्द बिलास ।
सीन–संसै तम छूटि गयो है ता पद लियो निवास ॥६॥
शीन–सनै सनै[२] वह प्रेम प्रीति परमारथ लागै ।
साद–साधना सधे जुक्ति सों अनुभौ जागै ॥ ७ ॥
जाद–जाती नाम भयो सब बिधि पूरन काम ।
तो–तेज पुंज तपवत चहुँ जुग ऐसो प्रभु को नाम ॥८॥
जो–जो मौजै करै पाप अरु पुन्न न लेखै ।
ऐन–ऐन लेय जद हाथ रूप निज साहब देखै ॥ ९ ॥
गैन–ग्यान उद्वैत भयो है सतगुरु के परताप ।
फे–फहमंदा[३] भजन को दिव्य दृष्टि को जाप ॥ १० ॥
क़ाफ–कहर है लाफ[४] झूठ की तजिये आसा ।
काफ–कमाल करार सत्त को जूह निरासा ॥ ११ ॥
लाम–लाहुत[५] सुठि[६] सिखर है दूरिहुँ तें बहु दूर ।
मीम–मरजीवा है रहै सोइ पावै दरस हजूर ॥ १२ ॥
नूँ–नूतन[६] छबि देइ दुरुहुरा[७] सुंदर राजै ।
वाव–वाहै वाह सो अहै बचन मुख कहत न छाजै ॥१३॥
हे–हद बेहद इक सम भयो मध्य बोलता आहि ।
लामअलिफ–सो निकटहिं पावो चित दै चितवहु ताहि॥१४॥

---

(१) कपट को दूर नहीं किया। (२) धीरे धीरे। (३) जानकार, भेदी। (४) गप। (५) त्रिकुटी। (६) सुंदर। (७) थरहरा।

हमजा--हम हमार द्वैत तहँ नाहिन सोहै ।
ये--येक तत्त है ज्ञान ध्यान तब जन्म न मोहै ॥ १५ ॥
तीनि आँक मेँ वस्तु सकल है रज तम सत सम ईस ।
भीखा नाम सुन्न[१] जब दीन्हो तब भयो अच्छर तीस॥१६॥

पहाड़ा

एका एक मिले गुरु देवा, सिष सोई जो लावे सेवा ।
तन मन वार चरन चित धारा, एक दहाई दसवँ द्वारा॥१॥
दूआ दुई द्वैत जो तजै, जोग जुगति मिलि आपा भजै[२] ।
सुरति बिचार निरति पहँ गयऊ, दुइ पर सुन्न बीस गुन भयऊ॥२
तीया तीनि ताप जब मेटे, तबही जीव नरायन भेँटे ।
मक्का[३] मदीना[३] घट मेँ खोजा, तीन दहाई तीसो रोजा॥३
चैाथे चार खानि हैँ जेते, सब घट ब्रह्म बोलता तेते ।
घाटि[४] कहूँ नहिं हाल हजूरा, चार दहाई चालिस पूरा॥४॥
पचयेँ पाँचो मुद्रा साधे, ससि और सूर अकासे बाँधे ।
प्रानायाम पवन परगासा, पाँच सुन्न पर भयो पचासा॥५॥
छठयेँ चक्र कठिन मति बाही, जे निबहे जेहि राम निबाही ।
चढ़ै पवन ऊरधमुख भाठी, छः दहाई तिह पर साठी॥६॥
सतयेँ सब्द अनाहद बाजा, तूर सुनत मनुआँ भयो राजा ।
रैयत बंध अमल बरजोरा, सात दहाई सत्तर चोरा ॥७॥
अठयेँ अष्ट कमल दल फूला, जोति रूप लखि जियरा भूला ।
उदित भये परगासित ज्ञाना, आठ दहाई अस्सी भाना॥८
नैावेँ नाम निरंजन जोती, सहज समाधि जासु की होती ।
सो जानै जो जावै तहवाँ, नव दहाई नब्बे जहवाँ ॥९॥

---

(१) सिफ़र । (२) भागै, दूर हो । (३) मुसलमानोँ के तीर्थ । (४) कमी ।

दसयँ दसो दिसा मँ मेला, भीखा ब्रह्म निरंतर खेला।
दसँ दहाई अजपा जाप, बढ़ै दस गुना गुन परताप॥१०॥
जो कोइ नाम पहाड़ा पढ़ै, प्रेम प्रीति दस गूना बढ़ै॥११॥

कुंडलिया

(१)

जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ ॥
बेमुख बहु घर माहिँ एक तँ एक अपर्बल।
तेहू तँ हैँ अधिक अधिक तँ अधिक महाबल ॥
तेहिँ मँ मन अरु पवन त्रिगुन कै डोरि लगाई।
बाँधे सब जग जाल छुटै कोऊ नहिँ पाई ॥
जौ भीखा सुमिरै राम को तौ सकल अर्थ होइ जाहि।
जीव कहा सुख पावई बेमुख बहु घर माहिँ ॥

(२)

राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन ॥
सो जन परम प्रबीन लोक अरु बेद बखानै।
सतसंगति मँ भाव भक्ति परमानँद जानै ॥
सकल बिषय को त्यागि बहुरि परबेस[1] न पावै।
केवल आपै आपु आपु मँ आपु छिपावै ॥
भीखा सब तँ छोट होइ रहै चरन लवलीन।
राम रूप को जो लखै सो जन परम प्रबीन ॥

(३)

जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ ॥
सतगुरु खोजहु जाइ जहाँ वै साहब रहते।
निसि दिन इहै बिचारि सदा हरि को गुन कहते ॥

---

(१) दख़ल।

समुझै बूझि बिचारि तन मन लावै सेव।
कृपा करहिँ तब रीझि कै नाम देहिँ गुरुदेव॥
भीखा बिछुरे जुगन के पल महँ देहिँ मिलाइ।
जौ भल चाहो आपनो तौ सतगुरु खोजहु जाइ॥

(४)

जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग॥
हिये न हरि अनुराग पागि मन बिषै मिठाई।
जग परपंच मैं सिद्ध साध्य मानो नव निधि पाई॥
जहाँ कथा हरि भक्ति भक्त कै रहनि न भावै।
गुनना गुनै बेकाम झूँठ मैं मन सुख पावै॥
भीखा राम जाने बिना लगो करम माँ दाग।
जज्ञ दान तप का किये जौ हिये न हरि अनुराग॥

(५)

मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजे सो धन्य॥
राम भजे सो धन्य धन्य बपु[1] मंगलकारी।
राम चरन अनुराग परम पद को अधिकारी॥
काम क्रोध मद लोभ मोह की लहरि न आवै॥
परमातम चेतन्य रूप महँ दृष्टि समावै॥
ब्यापक पूरन ब्रह्म है भीखा रहनि अनन्य।
मन क्रम बचन बिचारि कै राम भजे सो धन्य॥

(६)

दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ॥
होनी होइ सो होइ निंदवै भावै कोई।
अहित करै अपमान मान तहँ चहै न वोई॥

---

(१) शरीर

दुर्बचन बहुत मुख पर कहै हठ करि करै बिषाद ।
सो नहिं लावै आपु पर जन ता को रखु मरजाद ॥
परै सो ओढ़ै सीस पर भीखा सनमुख जोइ ।
दृढ़ निस्चै हरि को भजै होनी होइ सो होइ ॥

(७)

धनि सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ॥
ता सम तुलै न कोइ होइ निज हरि को दासा ।
रहै चरन लैालीन राम को सेवक खासा ॥
सेवक सेवकाई लहै भाव भक्ति परवान ।
सेवा को फल जोग है भक्त बस्य भगवान[१] ॥
केवल पूरन ब्रह्म है भीखा एक न दोइ ।
धन्य सो भाग जो हरि भजै ता सम तुलै न कोइ ॥

(८)

धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥
पसु सम करै बिहार मुरख जानै नहिं काज अकाज ।
वृषभ[२] सदृस कामी बड़ा इंद्री सहित समाज ॥
जड़ सरीर नर बुद्धि नहिं इनके सींग न पोंछ ।
खाहि पेट भरि सोवहीं जानहिं अगति न मोछ[३] ॥
(भीखा) धृग जीवन धृग जन्म है धृग लीन्हौं अवतार ।
धरि नर तन हरि नहिं भजै पसु सम करै बिहार ॥

(९)

यह तन अयन[४] सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥
कुंजी सतगुरु पास कृपा करि खोलहिं जबहीं ।
बूझहिं जेहि अधिकार बस्तु देखलावहिं तबहीं ॥

---

(१) सेवा का फल मेला है क्योंकि भगवान भक्त के बस में हैं। (२) साँड़। (३) कुगति और मुक्ति में भेद नहीं समझते। (४) घर।

जड़ि ताला बज्र कपाट को तहँ बैठे आतम राम ।
देखे सुने की गम नहीं नहिं आँखि कान को काम ॥
भीखा प्रीति प्रतीति धरु करु इष्ट बचन बिस्वास ।
यह तन अयन सरूप हरि कुंजी सतगुरु पास ॥

(१०)

मन लागो गोबिंद सों छोड़ि सकल भ्रमफाँस ॥
छोड़ि सकल भ्रमफाँस आस नहिं काहु की करते ।
यह माया परपंच ताहि महँ रहते डरते ॥
केवल ब्रह्म प्रकास मों गुरु आप कह्यो करि सैन ।
छुटै सकल मन कामना सब्द रूप भयो ऐन ॥
भीखा मन बच कर्मना इक भक्तन कै आस ।
मन लागो गोबिंद सों छोड़ि सकल भ्रम फाँस ॥

(११)

जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥
जोग मिलन को नाम सुरति जा मिलै निरति जब ।
दिव्य दृष्टि संजुक्त देखि के मिलै रूप तब ॥
जीव मिलै जा पीव को पीव स्वयं भगवान ।
तब सक्ति मिलै जा सीव को सीव परम कल्यान ॥
भीखा ईसुर की कला यह ईसुरताई काम ।
जुक्ति मिले जोगी हुआ जोग मिलन को नाम ॥

(१२)

सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास ॥
तेहि कहिये हरिदास आस जेहि दूसर नाहीं ।
सहजहिं कियो बिचार जाय रहि सतगुरु पाहीं ॥
सीस चढ़ायो ताहि को हलुक भयो देह भार ।
टहल करे मुख देखि रुख साहब परम उदार ॥

भीखा रीझै कृपा करि देवै रूप प्रकास।
सहजहिं दृष्टि लगी रहै तेहि कहिये हरिदास ॥

(१३)

पाहुन आयो भाव सौं घर मैं नहीं अनाज ॥
घर मैं नहीं अनाज भजन बिनु खाली जानो।
सत्य नाम गयो भूल झूठ मन माया मानो ॥
महा प्रतापी राम जी ताको दियो बिसारि।
अब कर छाती का हनो[1] गयो सो बाजी हारि ॥
भीखा गये हरि भजन बिनु तुरतहिं भयो अकाज।
पाहुन आयो भाव सौं घर मैं नहीं अनाज ॥

(१४)

बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिं ॥
अच्छर समुझा नाहिं रहा जैसे का तैसा।
परमारथ सौं पीठ स्वारथ सन्मुख होइ बैसा ॥
सास्तर मति को ज्ञान करम भ्रम मैं मन लावै।
छुइ न गयो बिज्ञान परम पद को पहुँचावै ॥
भीखा देखे आपु को ब्रह्म रूप हिये माहिँ।
बेद पुरान पढ़े कहा जौ अच्छर समुझा नाहिँ ॥

(१५)

राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ ॥
जीवन का फल सोइ मगन मन हरि जस गावै।
परमातम चेतन्य रूप आपा दरसावै ॥
जोग पपील[2] को मत कठिन अंध धुंध दरबार।
सोहं सन्मुख सहज घर मत बिहंग निरधार ॥

(१) अब हाथ से छाती कूटने से क्या होता है। (२) चींटी।

भीखा त्रैगुन गुनन के बस्य परा सब कोइ।
राम भजे दिन घरी इक जीवन का फल सोइ॥

(१६)

राम भजन को कौल कियो दिन ऐसहि ऐसहि जात॥
ऐसहि ऐसहि जात चेत नहिँ करत अनारी।
लोक लाज कुल कानि[१] मानि हरि नाम बिसारी॥
अपने मनै सपूत सूर अति से बल भारी।
जनिहै बिते दिन चारि काल सिर मुगदर मारी॥
भीखा समुझत गर्भ बास दुख थरथर कंपत गात।
राम भजन को कौल कियो दिन ऐसहि ऐसहि जात॥

(१७)

सुत कलित्र[२] धन धाम सुख मानो सुपना को सो साँच॥
सुपना को सो साँच मानि ता को पतियाना।
कहा रह्यो का भयो समुझि नहिँ करत अयाना[३]॥
ज्योँ पवन उदक[४] भँवरी दियो कहै बवंडर भूत।
बढ़ो बहुत फिरि मिटि गयो कोउ न रहा इत ऊत॥
जो भीखा जाने राम को तेहि झूठ लगत मत पाँच।
सुत कलित्र धन धाम सुख मानो सुपना को सो साँच॥

(१८)

चलनी को पानी पड़ो बरहा[५] कभी न होइ॥
बरहा कभी न होइ भजन बिनु धिग नर देँहीं।
झूँठ परपंच मन गह्यो तज्यो हरि परम सनेही॥
ज्योँ सुपने लागी भूख अन्न बिनु तन मरि जाही।
कबहीँ के उठे जाग हरख कहुँ बिसमै नाहीँ॥

---

(१) प्रतिष्ठा। (२) स्त्री। (३) नादान। (४) पानी। (५) नहर।

(भीखा) सत्य नाम जाने बिना सुख चाहे जो कोइ ।
चलनी को पानी पड़ो बरहा कभी न होइ ॥

साखी

॥ भेष रहनी ॥

काया कुंड बनाइ कै घूमि घोटना[1] देइ ।
बिजया[2] जीव मिलाइ कै निर्मल घोँटा[3] लेइ ॥१॥
साफी[4] सहज सुभाव को छानो सुरति लगाय ।
नाम पियाला छकि रहै अमल उतरि नहिँ जाय ॥२॥
जोग जुक्ति सुमिरन बनो हर दम मनिया[5] नाम ।
करम खंडि कंठी गुहो गर बाँधो प्रानायाम ॥३॥
अगम ज्ञान गूदर लियो ढाँको सकल सरीर ।
ब्रह्म जनेऊ मेखला पहिरहिँ मस्त फकीर ॥४॥
सेल्ही संसय नासि कै डारो हृदय लगाय ।
तिलक उनमुनी ध्यान धरि निज सरूप दरसाय ॥५॥
ताखी[6] तत्त जो माल[7] है राखो सीस चढ़ाय ।
चरन कमल निरखत रहो मौजै मौज समाय ॥६॥
तूमा[8] तन मन रूप है चेतनि आब[9] भराय ।
पीवत कोई संत जन अमृत आपु छिपाय ॥७॥
कुबरी[10] पानी[11] अंग भो पवन दंड बरजोर ।
लागी डोरी प्रेम की तम मेटो भयो भोर ॥८॥
पैावा[12] अधर अधार को चलत सो पाँव पिराय ।
जो जावे सो गुरु कृपा कोउ कोउ सीस गँवाय ॥९॥

---

(१) घुमाय के घोटै । (२) भाँग । (३) घूँट । (४) छन्ना । (५) माल का दाना । (६) साधुओँ की टोपी । (७) माला । (८) तुंबा । (९) पानी । (१०) छड़ी, बैरागिन । (११) पानि = हाथ । (१२) खड़ाऊँ ।

मुरछल मन उनमान का छाया ज्ञान अकार ।
उष्न[1] ताप निस दिन सहै केवल नाम अधार ॥१०॥
अर्ध उर्ध के बीच मैं कमरबस्त[2] ठहराय ।
इँगला पिँगला एक है सुखमन के घर जाय ॥११॥
झोरी मौज अनयास[3] की बटुआ आनँद[4] लेय ।
मृगछाला त्रिकुटी भई बैठि सब्द चित देय ॥१२॥
सकल संत के रेनु[4] लै गोला गोल बनाय ।
प्रेम प्रीति घसि ताहि को अंग बिभूति लगाय ॥१३॥
भिच्छा अनुभव अन्न लै आतम भोग बिचार ।
रहै सो रहनि अकासवत बरजित जानि अहार ॥१४॥
जटा बढ़ावे भाव की जब हरि कृपा अमान ।
मुद्रा नावै नाम की गुरु सब्द सुनावै कान ॥१५॥
आड़बंद[5] हर हाल की अलफी[6] रहनि अडोल ।
बाघम्बर[7] है सुन्न का अविगत करत कलोल ॥१६॥
पाँच पचीस धुईं लगी धीरज कुंड भराय ।
ज्ञान अगिन ता मैं दियो बिषय इन्हन[8] जरि जाय ॥१७॥
फाहुलि[9] अगम अचिंत की चीपी[10] ध्यान लगाय ।
नूर जहूर झलकत रहै ता मैं मन अरुझाय ॥१८॥
भेख अलेख अपार है कहत न ज्ञान समाय ।
सुन्न निरंतर अलख है खोज करै कोउ जाय ॥१९॥
साहब सब घट रमि रहो पूरन आपै आप ।
भीखा जो नहिं जान ही सहै करम संताप ॥२०॥

---

(१) गरमी । (२) कमरबंद । (३) आसा से रहित । (४) धूल । (५) लँगोट ।
(६) बिना बँहोली का कुरता । (७) शेर के चमड़े का बस्त्र । (८) ईंधन ।
(९) फरुही । (१०) नाप का कटोरा ।

॥ ब्राह्मन या ब्रह्म ज्ञानी रहनी ॥

ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत ब्रह्म मई को ज्ञान।
ब्रह्म गायत्री जाप करि ब्रह्म रूप पहिचान ॥२१॥
ब्रह्म जनेऊ मेखला ब्रह्म कमंडल दंड।
ब्रह्म भोग भिच्छा लिये ब्रह्मै आसन मंड ॥२२॥
ब्राह्मन कहिये ब्रह्म-रत है ता का बड़ भाग।
नाहिँत[1] पसु अज्ञानता गर डारे तिन ताग[2] ॥२३॥
संत चरन मैँ लगि रहे सो जन पावे भेव।
भीखा गुरु परताप तेँ काढ़ेव कपट जनेव ॥२४॥

॥ संत महिमा ॥

संत चरन मैँ जाइ के सीस चढ़ायो रेनु[3]।
भीखा रेनु के लागते गगन बजायो बेनु ॥२५॥
बेनु बजायो मगन ह्वै छुटी खलक की आस।
भीखा गुरु परताप तेँ लियो चरन मेँ बास ॥२६॥

॥ मिश्रित ॥

जोग जुक्ति अभ्यास करि सोहं सब्द समाय।
भीखा गुरु परताप तेँ निज आतम दरसाय ॥२७॥
नाम पढ़ै जो भाव सोँ ता पर होहिँ दयाल।
भीखा के किरपा कियो नाम सुदृष्टि गुलाल ॥२८॥
जाप जपै जो प्रीति सोँ बहु बिधि रुचि उपजाय।
साँझ समय औ प्रात लगु तत्त पदारथ पाय ॥२९॥
राम को नाम अनंत है अंत न पावे कोय।
भीखा जस लघु बुद्धि है नाम तवन सुख होय ॥३०॥

(१) नहीं तो। (२) तीन तागा अर्थात जनेऊ। (३) धूल।

एक संप्रदा सब्द घट एक द्वार सुख संच।
इक आतम सब भेष मों दूजो जग परपंच ॥३१॥
भीखा भयो दिगम्बर[1] तजि कै जक्त बलाय।
कस्त[2] करो निज रूप को जहँ को तहाँ समाय ॥३२॥
भीखा केवल एक है किरतिम भयो अनंत।
एकै आतम सकल घट यह गति जानहिं संत ॥३३॥
एकै धागा नाम का सब घट मनिया माल।
फेरत कोइ संतजन सतगुरु नाम गुलाल ॥३४॥
आरति हरि गुरु चरन की कोइ जाने संत सुजान।
भीखा मन बच करमना ताहि मिलै भगवान ॥३५॥
आरति बिनवै ब्रह्म को केवल नाम निहोर।
बारम्बार प्रनाम करु गुरु गोबिंद की ओर ॥३६॥

(१) साधू जो नंगे रहते हैं। (२) क़स्द = इरादा।

संतबानी पु तकमाला

जीवन-चरित्र हर महात्मा के उन की बानी के आदि में दिया है

कबीर साहिब का साखी संग्रह	|||)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग पहला ||), भाग दूसरा ...	||)
,, ,, भाग तीसरा |), भाग चौथा ...	=)
,, ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	|)
,, अखरावती, पहला छापा -) दूसरा छापा ...	-)||
धनी धरमदास जी की शब्दावली	|≈)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १... ...	|||)
,, ,, भाग २, पद्मसागर ग्रंथ सहित	|||)
,, ,, रत्न सागर	||≈)
,, ,, घट रामायन, भाग प० १), भाग दू० ...	१)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण, भाग प० १), भाग दू० ...	१)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी"१-) भाग २ "शब्द" ...	|||-)
सुंदर बिलास	||≋)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलिया	||)
,, भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कबित्त, सवैया ...	||)
,, भाग ३—भजन और साखियाँ	||)
जगजीवन साहिब की बानी, भाग पहला ||-) भाग दूसरा ...	||-)
दूलन दास जी की बानी	≋)
चरनदास जी की बानी, भाग पहला ||)|| और भाग दूसरा ...	|≋)||
ग़रीबदास जी की बानी	|||≈)
रैदासजी की ,, ...	|-)||
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	|-)
,, ,, के चुने हुए पद और साखी	≋)||
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	|)||
भीखा साहिब की शब्दावली	|≋)
गुलाल साहिब की बानी	||-)||
बाबा मलूकदास जी की बानी	≋)
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	)||
यारी साहिब की रत्नावली	-)||